In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रभु पूजा पद्धति

हि ४८२

लेखक

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

nal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ श्रीहरिः ॥

प्रभु पूजा पद्धति

हिन्दी
सर्व ग्रन्थ
४८२

लेखक-

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

प्रकाशक

संकीर्तन-भवन

प्रतिष्ठानपुर (झूसी) प्रयाग

मूल्य नेट २।

अष्टम संस्करण ५००० प्रति | फाल्गुन सम्वत् २०३६ वि० | मूल्य ५० पैसा

मुद्रक—बंशीधर शर्मा, भागवत प्रेस, ८५२ मुट्ठीगंज, प्रयाग ।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्रीभागवत-चरित की आरती

भागवत चरित अमृत पीजे ।
आरती सब मिलिके कीजे ।।

दयाके सागर हैं यदुचन्द, गहे अजने तिनिपद अरबिन्द ।
कमल मुख झरें सुधाकें बिन्दु, तिनहिँ पी पी के नित जीजे ।।१।।आ०

नामको रसना करिकें गान, करै मन मोहन मूरति ध्यान ।
नयन निरखें सब थल भगवान, कृष्णको कीर्तन नित कीजे ।।२।।आ०

यादि जब चरितनिकी आवै, पुलक तनु सबरो ह्वै जावै ।
प्रेम सब अंगनिमें छावै, भावमें भक्त रहें भीजे ।।३।।आ०

हियेपै चढ़े भक्तिको रंग, मिलै भक्तनिको नित सतसंग ।
काज सब करें कृष्णहित अंग, व्यरथ नर जीवन नहिँ छीजे ।।४।।आ०

प्रेम अरु लयतें सब गाओ, पार भवसागर ह्व जाओ ।
पदुम-पद-रज प्रभुकी पाओ, आरती भक्त वृन्द लीजे ।।५।।आ०

92036

nal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

॥ श्रीहरिः ॥

भूमिका

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

नर तनु पाकर जिसने प्रेमपूर्वक प्रभुकी पूजा नहीं की उसका नर-तनु पाना व्यर्थ है। भोजन करके जीवित रहना ही जीवन का लक्ष्य हो तब तो कूकर 'सूकर, काक-कङ्क आदि पशु-पक्षी भी विष्ठा खाकर चिरकाल तक जीते हैं, क्या उनका जीवन वास्तव में जीवन है। यदि सन्तान उत्पन्न करना ही जीवन का लक्ष्य हो, तो सुनते हैं। कुक्कुटी तो प्रति दिन अंडा देती है। आहार, निद्रा भय तथा मैथुनादि तो पशु-पक्षी सभी योनियों में समान ही है। मनुष्य योनि की विशेषता इसी में है कि इसमें भगवान् की कथा कहने सुनने का, भगवान् के नाम और गुण गाने का तथा भगवान् की पूजा करने का सुअवसर प्राप्त होता है।

पूजा किये बिना तो प्राणी रह नहीं सकता, वह किसी-न-किसी की पूजा करेगा अवश्य। अनन्तर इतना ही है, कोई असत् अनित्य नाशवान् को पूजते हैं, कोई सत् नित्य तथा अविनाशी की पूजा करते हैं, कोई शास्त्रीय विधि से पूजा करते हैं, कोई शास्त्रीय विधि को तिलाञ्जलि देकर पूजा करते हैं।

आप सोचिये कोई जार या वेश्यागामी जब प्रेमभरित हृदय से अपनी प्रेयसी के समीप जाता है तो उसे अच्छी-से-अच्छी माला पहिनाता है, जो भी उसके पास होता है, उसकी भेंट करता है, उसे खिलाकर खाता है, उसे पिलाकर उसके उच्छिष्टपेय को पीता है, उसके पैरों को पकड़ता है। यही तो पूजा है इसी का नाम तो अर्चना है, किन्तु यह अविहित पूजा है, अनित्य तथा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

नाशवान् की पूजा है, अशास्त्रीय पूजा है, नरक को ले जाने वाली अर्चना है। इसके विपीरत जो गुरु में, अतिथि में, विप्र में भगवत् प्रतिमा में, संत में, तीर्थमें, या अन्य किसी प्रकार की भगवत् विग्रह में शास्त्रीय विधि से पूजा करते हैं, इससे अपने हृदय में कितनी शांति होती है घर का वायुमण्डल कैसा पावन तथा आध्यात्ममय बन जाता है। जिस घर में भगवान् की सेवा पूजा नहीं, वह घर स्मशान के तुल्य है। जो रोटी बनते ही म्लेच्छों की भाँति बिना भोग लगाये बिना तुलसी डाले खाने बैठ जाते हैं, मानों वे पाप खाते हैं, उनके बच्चे संस्कारहीन, सदाचारहीन तथा सद्गुणों से रहित होते हैं, उसमें शिष्टाचार नहीं, सदाचार नहीं। आध्यात्मिकता नहीं। पहिले बच्चे जब भी रोटी बनते माँगने लगते थे तो माँ कह देती थी "बेटा ! अभी भगवान् का भोग नहीं लगा, अभी रोटी कैसे दें। भोग लग जाने दो।" इतना सुनते ही बच्चे चुप हो जाते थे। प्रातः होते ही वे स्नान करके पूजा घर में चुपचाप बैठ जाते। इन बातों का उनके आगामी जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता था वे कैसे धार्मिक विचार के होते थे, कितने आस्तिक होते थे इसे सभी जानते हैं। आज प्रभु पूजा की प्रथा लुप्तप्राय हो गयी। बहुत से लोग जिनके वंश में परम्परा से पूजा होती आई थी उन्हें विधि मालूम नहीं। पंडितजी आकर पर्व पर करा दें तो कर लें, नहीं तो वैसे ही बैठे रहें।

शास्त्रों में पूजा तीन प्रकार की बतायी गयी है। वैदिक विधि से, तान्त्रिक विधि से तथा वैदिक तान्त्रिक दोनों विधि से। वैदिक विधि से तो जैसे पुरुष सूक्त अथवा अन्य वैदिक मन्त्रों से देवता का अर्चन करना। इस पूजा का अधिकार वैदिक विधि से मन्त्र जानने वाले द्विजातियों को ही है। स्त्री, शूद्र या नाममात्र के द्विज-जो वेदमन्त्र शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते वे इसे नहीं कर सकते। वेदमन्त्र दोनों से मिश्रित मन्त्रों से भी वे ही लोग कर सकते हैं, किन्तु तांत्रिक पूजा के सभी अधिकारी हैं। पौराणिक तथा अन्य

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्राकृत मन्त्रों से सभी पूजा कर सकते हैं। इसलिये आजकाल तान्त्रिक पूजा का ही प्रचार-प्रसार है। उन अवैदिक मन्त्रों से देवताओं को भिन्न-भिन्न वस्तुएँ अर्पित की जाती हैं।

मेरे बहुत से प्रेमी बन्धुओं ने बहुत पहिले मुझसे कहा था कि आप पूजा के ऊपर एक छोटी-सी पुस्तिका लिखें जिसमें षोडशोपचार पूजा का सविधि वर्णन हो। उस समय मैं अनेक कारणों से ऐसा नहीं कर सका।

इधर मैं चिरकाल से 'भागवती कथा' के लेखन कार्य में लगा हुआ हूँ। 'भागवती कथा' श्रीमद्भागवत को आधार मानकर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ है। इसमें सभी पुराण तथा शास्त्रों की सुन्दर सरस मनोहर तथा शिक्षाप्रद कथायें हैं। पूरा ग्रन्थ १०८ भागों में समाप्त करने का विचार है। लिखते-लिखते जब श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध की कथायें लिखने लगे प्रसंगानुसार भागवती कथा के ५२ वें खण्ड में एक अध्याय भगवान् की पूजा का भी आया। उसे अन्य अध्यायों की भाँति लिख दिया। जब छपने लगा तो मनमें आया, क्यों न इस अध्याय को पृथक् छपा दें। इसके पृथक् छाप देने से जो पूजा-विधि जानने के इच्छुक हैं उनको बहुत लाभ होगा। यही सोचकर हम इस अध्याय को पृथक् पुस्तकाकार प्रकाशित कर रहे हैं। इसमें भगवान् की या अन्य देवों की पूजा के तान्त्रिक मन्त्र है। वैदिक मन्त्र हमने नहीं लिखे। उन तान्त्रिक मन्त्रों का भाव दोहा में लिख दिया है। जो इन मन्त्रों को भी न पढ़ सकें वे दोहों को बोलकर ही पूजा कर सकते हैं भगवान् तो भावग्राही हैं, वे दोहाओं से की हुई प्राकृत भाषा की पूजा से भी प्रसन्न हो जायँगे।

पूजा करने के पूर्व सब सामग्री एकत्रित कर लेनी चाहिये। कुश, मृगचर्म, ऊनी-सूती जैसा भी मिले आसन बिछाकर उस पर बैठ जाय, सम्मुख जिसकी पूजा करनी हो उस पर देवताओं

Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathm

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

को बिठा ले। फिर आचमन कर विष्णु स्मरण करे और कहे चाहें अपवित्र दशा में हों या पवित्र दशा में, कैसी भी दशा में क्यों न हों, पुण्डरीकाक्ष भगवान् का स्मरण करते हैं वे भीतर बाहर से पवित्र हो जाते हैं।❀

तदनन्तर प्राणायाम करे। प्राणायाम गायत्री मन्त्र या भगवन्नाम से करे। फिर पूजा का संकल्प करे। कहे—मैं अमुक संवत्सर, अमुक मास, अमुक पक्ष, अमुक तिथि तथा अमुक वार में श्रीपमेश्वर के प्रीत्यर्थ भगवान् का पूजन करता हूँ।+

इस प्रकार संकल्प करके कलश, शङ्ख, घंटा का संक्षिप्त पूजन करके आगे कहे हुए मंत्रों से पूजन करे। इस प्रकार जो भगवान् की चित्रछवि, धातुपाषाण मूर्ति या शालग्राम की पूजा करेंगे वे परम पुण्य के भागी बनेंगे। जो मनुष्य शुष्क हृदय के हैं भौतिकवादी हैं या संस्कारहीन हैं उनकी बात छोड़ दीजिये, किन्तु जिनमें तनिक भी आस्तिक भावना है वे इस प्रकार नित्य नियम से भगवान् का पूजन करके सुखी होंगे यह मेरा दृढ़ विश्वास है। जो बन्धु इस प्रभु पूजा पद्धति का प्रसार-प्रचार करेंगे उन्हें भी अक्षय लाभ होगा। अन्त में परमपिता परमात्मा के पादपद्मों में पुनः

❀ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्यभ्यान्तरः शुचि॥
पुण्डरीकाक्ष पुनातु

+संकल्प—हरिओम् विष्णुर्विष्णुविष्णुरद्मे तस्य ब्राह्मणो द्वितीय परार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्त मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशे पुण्य क्षेत्रे अमुक नाम संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रः अमुक नामाहं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं श्रीभगवत् पूर्जनमहं करिष्ये।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पुनः प्रार्थना है कि वे अपनी पुण्यप्रदा पूजा का हमें अधिकारी बनावें और हमें ऐसी बुद्धि दें कि उनकी पूजा में हमारा मन लगे और उसे नित्य नियम से कर सकें। यदि इस पूजा पद्धति को पढ़कर एक भी व्यक्ति पूजा में प्रवृत्त हो सका तो लेखक प्रकाशक का सभी श्रम सफल हो जायगा। संसार में प्रभु पूजा से बढ़कर पुण्यप्रद कार्य नहीं, किन्तु हाय ! कलियुग के हम अभागी जीवों की उधर रुचि नहीं, प्रवृत्ति नहीं। प्रभो ! कृपा करो ! दयानिधे दया दिखाओ। हम आपकी पूजा करके अपने जीवन को सार्थक बना सकें।

सङ्कीर्तन भवन, प्रतिष्ठानपुर
झूसी (प्रयाग)
शरदपूर्णिमा सं० २०१९ वि०

विनीत–
प्रभुदत्त

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हिन्दू धर्म और हिन्दी-साहित्य में युगान्तकारी
धार्मिक प्रकाशन

"भागवती कथा"

देश के विभिन्न विद्वानों, नेताओं पत्रकारों द्वारा
भूरि भूरि प्रशंसित। इसके लेखक हैं।

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

इसे पढ़कर आप

१—श्रीमद्भागवत तथा अन्यान्य पुराणों की कथाओं का रहस्य सरलता, सरसता और घरेलू ढङ्ग से समझेंगे।

२—दैनिक जीवन को सात्विक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन की सार्थकता में परिणित करेंगे।

३—व्यवहारिक या गार्हस्थ्य जीवन को जीने के लिये नहीं, जीवन के लिये उच्च और धार्मिक बनायेंगे।

४—श्रेय और प्रेय, योग और भोग एक साथ सम्पादन करने—प्राप्त करने—की शिक्षा घर बैठे प्राप्त करेंगे।

५—जननी जन्मभूमि की महत्ता को समझकर स्वधर्म, स्ववर्ण तथा स्वदेश के प्रति निष्ठावान् बनेंगे।

इस अभूतपूर्व ग्रन्थ में १२५ भाग होंगे।

प्रतिमास एक भाग प्रकाशित करने की योजना चल रही है। अब तक ११८ भाग छप चुके हैं। २५० पृष्ठों के प्रत्येक सचित्र भाग की दक्षिणा ३) रुपया है १ से १२ खण्ड तक कई बार छप चुके हैं। प्रथम खण्ड के चार ही वर्ष में चार संस्करणों में १८ हजार ग्रन्थ छप चुके हैं।

३५) रु० वार्षिक प्रदान करने पर १२ भाग बिना डाक व्यय के आपके घर रजिष्ट्री से पहुँच जायँगे।

प्राप्तिस्थान—संकीर्तन भवन झूसी, (प्रयाग)

Prabhupadi Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रभु पूजा पद्धति

[१०२९]

एवमग्न्यर्कतोयादावतिथौ हृदये च यः ।
यजतीश्वरमात्मानमचिरान्मुच्यते हि सः ॥*

(श्री० भा० ११ स्क० ३ अ० ५५ श्लोक)

छप्पय

पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, नाना पट भूषन ।
गन्ध, पुष्प, तिल, हार, धूप, दीपक, वर व्यञ्जन ॥
पुङ्गीफल, ताम्बूल, दक्षिणा, नीराजन करि ।
क्षमा प्रार्थना स्तोत्र दण्डवत पृथिवीपै परि ॥
यों तन्मय ह्वैकें करै, पूजन प्रभु परमेशको ।
होवै तबहीं नाश सब, जनके दुख भय क्लेशको ॥

मनुष्यों में एक स्वाभाविकी प्रवृत्ति होती है, किसी का पूजन करें, किसी से घृण करें, किसी के सम्मुख नम्रता दिखावें, किसीकी उपेक्षा कर दें। साधक को उपेक्षा करनी हो, घृणा करनी हो तो अपने दुर्गुणों से करे। नम्र होना हो, पूजा करनी हो तो परात्पर प्रभु की करे। क्योंकि संसार में प्रभु के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं, कोई वन्दनीय नहीं, कोई अर्चनीय नहीं। पूजा करनी

* माहमुनि आविर्होत्र कह रहे हैं—"राजन् ! इस प्रकार जो अग्नि, सूर्य, जल, अतिथि अथवा अपने हृदय में ईश्वर का पूजन करता है, वह अविलम्ब ही संसार से मुक्त हो जाता है।"

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हो तो विधपूर्वक करे, जो शास्त्र की विधि का परित्याग करके मनमानी करता है, स्वच्छन्द आचरण करता है, उसे आन्तरिक शान्ति भी नहीं होती, सुख नहीं होता और जिस सिद्धि के लिये वह कर्म कर रहा है, वह सिद्धि भी उसे प्राप्त नहीं होती। अतः जो भी कार्य करे, शास्त्र विधि को समझकर करे। यद्यपि भगवान् का पूजन कैसे भी किया जाय, उससे अनिष्ट की सम्भावना नहीं, क्योंकि भगवान् जनार्दन भावग्राही हैं, फिर भी, जहाँ तक हो सके, विधिपूर्वक ही पूजन अर्चन करना चाहिये, क्योंकि विधि निषेध का वर्णन वेदों में है और वेद भगवान् की आज्ञा है, उनका स्वरूप ही है।

सूतजी कहते हैं—"मुनियो! महाराज निमि के पूछने पर योगेश्वर आविर्होत्र पूजा की विधि बताते हुए कह रहे हैं–"राजन्! पूजन, अर्चन, सेवन, भजन, परिचर्या तथा यजन ये सब पर्याय-वाची शब्द हैं। इनके करने के प्रथम, कर्ता को पवित्र होकर पूजा करने का अधिकार प्राप्त करना चाहिये। स्नानादि से शरीर शुद्धि करके, श्रद्धा संयम और सदाचारी की भावना से अन्तःकरण को प्रफुल्लित करके तब पूजा करने को आवे। जिस प्रतिमा में पूजन करना हो, उसके सम्मुख श्रद्धा सहित आवे। आसन के बिना न बैठे। प्रथम पृथ्वी की प्रार्थना करे—"हे पृथिवी, तुमने सब लोकों को अपने ऊपर धारण कर रखा है, हे देवि! तुम्हें विष्णु भगवान् ने वाराह रूप से धारण किया था। हे माता! तुम मेरे इस आसन को धारण करो और इसे पवित्र करा दो।"* इस प्रकार प्रार्थना करके आसन पर जल छिड़ककर उसे पवित्र कर ले। तदनन्तर तीन बार आचमन करके प्राणायाम करे। प्राणायाम

---

* पृथिवी त्वया धृता लोकाः देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्॥

Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

करने से नाड़ियों में रुका हुआ मल शुद्ध हो जाता है, इस प्रकार प्राणायाम से नाड़ी शुद्ध करके देव पूजन का सङ्कल्प करे। अमुक क्षेत्र में, अमुक संवत्सर, मास पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, आदि में प्रभु की प्रीति के निमित्त देव पूजन करता हूँ।" ऐसा सङ्कल्प कर के जल छोड़ दें, फिर जिस मन्त्र से पूजन करना हो, उसका अङ्गन्यास, करन्यास अपने अङ्गों में करे। क्योंकि स्वयं मन्त्रमय होकर उस मन्त्र से पूजा करनी चाहिये। स्वयं वेदस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिये। तदनन्तर हाथ में जल लेकर उसके चारों ओर घुमाकर दिग्बन्ध कर लेना चाहिये, तब प्रतिमा के सम्मुख बैठकर पूजन करे। पूजा की जो भी सामग्री हो, उसे एक बड़े पात्र में सुन्दरता के साथ सजाकर अपने दायीं ओर किसी पीढा-सी चौकी पर रख लेना चाहिये, जिससे प्रत्येक वस्तु के लिये बार-म्बार उठना न पड़े। वस्तुओं को देखकर गिनले कि सब वस्तु हैं या नहीं। फिर पूजा के लिये जो एक कलश में शुद्ध जल भरकर रखा है, उसमें गन्ध, पुष्प डालकर उसका पूजन करना चाहिये। शङ्ख में जल भरकर उसमें चन्दन पुष्प तुलसीदल डालकर उस जल को कलश में डाल देना चाहिये। इस प्रकार कलश-पूजन करके उसी जल को पूजा में लाना चाहिये। उस जल से पूजा की सामग्री को छिड़क देना चाहिये। घृत का दीपक जलाकर गन्ध,

---

कलश मंत्र—कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रःसमाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरीतथा॥
आयंतु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।

इस मन्त्र से आवाहन करके मूलमन्त्र से पूजन करे।

d Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अक्षत, पुष्प धूपादि से उस दीप का भी पूजन कर लेना चाहिये। घन्टा शङ्ख पर भी चन्दन पुष्प चढ़ाकर पूजा कर लेनी चाहिये

क्योंकि देवताओं के पूजन के पूर्व उनके पार्षदों का पूजन कर लेना आवश्यक है। द्वारपाल की पूजा हो जाने पर देवता की पूजा में

Gurukul Kangri University Haridwar. Valmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सुगमता हो जाती है। इस प्रकार पूजन की सब तैयारियाँ होने पर पूजन करे।❀

राजा ने कहा—"महाराज पूजन कैसे करे ?"

महामुनि आविर्होत्र बोले—"राजन् ! पूजन के अनेक भेद हैं। उनमें संक्षेप में पञ्चाङ्ग पूजन होता है और साधारणतया षोड़शोपचार पूजन होता है। वैसे तो और भी बहुत बड़े विस्तार हैं। उस विस्तार का मैं वर्णन नहीं करता। पञ्चाङ्ग पूजन में गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य ये पाँच वस्तुएँ होती हैं। ये एक-एक वस्तुएँ पाँचों भूतों का प्रतिनिधित्व करती हैं। षोड़शोपचार पूजन में १–आवाहन, २–आसन, ३–पाद्य, ४–अर्घ्य, ५–आचमन, ६–स्नान, ७–वस्त्र, ८–यज्ञोपवीत, ९–चन्दन, १०–पुष्प, तुलसी, ११–धूप, १२–दीप, १३–नैवेद्य, १४–मुखशुद्धि दक्षिणा, १५–आरती, १६–नमस्कार प्रदक्षिणा। फिर पुष्पाञ्जलि करके विसर्जन करे। इसमें अनेक मतभेद हैं। उन सबका विस्तार करने से संदेह बढ़ता है, अतः श्रद्धा सहित पूजन करना चाहिये।

राजा ने कहा—"भगवन् ! मुझे इन सबका अर्थ बताइये और किन मन्त्रों से कैसे पूजन किया जाता है, वह समझावें।"

योगेश्वर आविर्होत्र बोले—"राजन् ! यह कर्मकांड का विषय

❀ दीपक मन्त्र—भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

इस मन्त्र से आवाहन करके मूल मन्त्र से पूजन करे।

घण्टा—आगमार्थंतु देवानां गमनार्थंतु रक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद्घण्टां प्रपूजयेत्॥

शङ्ख मन्त्र—त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विहृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य ! नमोऽस्तु ते॥

इस मन्त्रों से आवाहन करके मूल मन्त्र से या पञ्चाङ्ग षोडशोपचार पूजन करे।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बड़ा विस्तृत है और बड़ा गूढ़ है। इसलिये मैं यहाँ बहुत संक्षेप में इसका वर्णन करूँगा। जिनको वैदिक मन्त्र उच्चारण करने की क्षमता हो, जिन्होंने उन्हें गुरुकुल में रहकर सीखा हो, उन्हें तो वैदिक मन्त्रों से षोडशोपचार पूजन करना चाहिये। विशेष कर पुरुष सूक्त के एक-एक मन्त्र को बोलकर एक-एक कृत्य करना चाहिये। वेद मन्त्रों का सबको अधिकार नहीं है। तान्त्रिक मन्त्रों से स्त्री, शूद्र सभी पूजन कर सकते हैं, अतः हम यहाँ तान्त्रित मन्त्रों के द्वारा ही पूजन की विधि बताते हैं।

१—आवाहन

पूजन में सर्वप्रथम आवाहन होता है। जैसे हमारे यहाँ कोई श्रेष्ठ पुरुष आता है तो उसे देखते ही प्रसन्नता पूर्वक कहते हैं—"आइये, आइये, आइये"। आवाहन का अर्थ है बुलाना सेवा सत्कार पूजन के लिये आवाहन करना। जो प्रतिष्ठित मूर्ति हैं, शालग्राम है, उनमें नित्य आवाहन की आवश्यकता नहीं। नित्य पूजा चित्रपट में भी आवाहन की आवश्यकता नहीं, आवाहन करले तो कोई हानि भी नहीं। हाथ में अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर कहे—"हे भगवन्! आइये-आइये इस स्थान पर आकर विराज जाइये। जब तक मैं पूजा करूँ तब तक आप कृपा करके यहाँ स्थिर हो जाये।❀ ऐसा कहकर आवाहन करे अक्षत पुष्प छोड़ दे। विष्णु पूजन में अक्षत निषेध किये हैं उनके स्थान पर सफेद तिल या जव चढ़ावे, नहीं केवल पुष्प ही। कहे–श्रीमते नारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय। नारायणम् आवाहयामि या

❀ आवाहनमंत्र–आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्रस्थिरोभव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सन्निधो भव॥
दोहा—आवें भगवन्! देव हे, यहाँ विराजैं आइ।
हौं जब तक पूजा करूँ, सुखी करें हरषाइ॥

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

गोपालकृष्णाय आवाहयामि। जिस देव का भी आवाहन करना हो। इसी तरह करना चाहिये।

२—आसन

आवाहन के अनन्तर बैठने को आसन दिया जाता है, जैसे अपने यहाँ श्रेष्ठ पुरुष आते हैं तो उनसे कहते हैं—"आइये, इस आसन को अलंकृत कीजिये।" इसी प्रकार ऐसी भावना करे कि हमारे इष्टदेव आ गये हैं अब उन्हें उत्तम आसन पर बिठावें। हाथ जोड़कर कहे—"हे देव! यह अत्यन्त रम्य, सुशोभन, दिव्य, सुखकर शुभ आसन हैं। आपको मैं इसे दे रहा हूँ कृपा करके इसे ग्रहण करें।"❀ यह कहकर सुन्दर आसन दे। आसन न हो तो शालग्रामजी को तुलसीदल ही आसन के स्थान में चढ़ा दे अथवा आसन रूप में पुष्प ही अर्पण कर दे। कहे—"आसनं समर्पयामि।"

३—पाद्य

आसन के अनन्तर पाद्य दिया जाता है। पाद्य कहते हैं, पैर धोने के जल को। पहिले ऐसा सदाचार था कि बाहर से कहीं से भी आवें, प्रथम पाद प्रक्षालन करके तब अन्य कृत्य किये जाते थे। जो श्रेष्ठ पुरुष आवें उन्हें सर्वप्रथम आसन पर बिठाकर उनके पैर धोने चाहिये। श्रेष्ठ पुरुषों का चरणोदक अत्यन्त पवित्र होता है, क्योंकि चरणों में भगवान् विष्णु का वास है और भगवान् का चरणामृत तो गङ्गाजल के समान है, श्री गङ्गाजी की उत्तपत्ति भगवान् के चरणारविन्दों से ही हुई है। "पाद्य का जल लेकर 'पाद्यं समर्पयामि' ऐसा कहकर जल छोड़ दे। पञ्चपात्रों में के पाद्य के पात्र से जल छोड़कर 'शुद्धोदकं समर्पयामि' ऐसा करकर

❀ आसन का मन्त्र–रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

दोहा—जैसो कछु हमने दयो, आसन सुखकर भव्य।
ग्रहण करें यदि आप प्रभु, तो होवै अति दिव्य॥

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शुद्धोदक भी छोड़ दे। पाद्य देते समय यह कहे—"हे देव ! यह कुछ उष्ण निर्मल सुगन्ध संयुक्त आपके पाद प्रक्षालन के हेतु मैं दे रहा हूँ इसे आप ग्रहण करें।❀

राजा ने पूछा—"भगवन् ! पञ्चपात्र क्या ?"

मुनि बोले—"पूजा करने वाले प्रतिमा के सम्मुख पाँच पात्र रखते हैं। एक बड़े पात्र में पाँच कटोरियाँ ताँबे या चाँदी की चतुर्दल कमल की भाँति रखते हैं, बीच में एक बड़ी चारों ओर चार छोटी ऊपर की में पाद्य का जल दायीं में अर्घ्य का जल, नीचे की में आचमन का जल और बायीं में स्नान का जल, तथा बीच में शुद्ध जल रखते हैं। एक चम्मच रखते हैं। उन कटोरियों में पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय तथा स्नानीय जल उन-उनकी सामग्रियों से मिश्रित भरा रहता है।

राजा ने पूछा—"भगवन् ! पाद्य अर्घ्यादि जलों में कौन-कौन समाग्री डाली जाती है ?"

मुनि बोले—"राजन् ! पाद्य के जल में समा के दाने डालते हैं, दूब विष्णुकान्ता तथा तुलसीदलादि डालते हैं। अर्घ्य के जल में चन्दन, पुष्प, जव, कुश, तिल, सरसो, दूध, दही आदि डालते हैं। आचमन के जल में कर्पूर, लवङ्ग, जाइफल तथा खस आदि सुगन्धित वस्तुएँ डालते हैं। इसी प्रकार स्नान के जल में भी चंदन कर्पूर आदि सुगन्धित द्रव्य डालते हैं। ये सब न हों तो केवल चारों में तुलसीदल चंदन ही डाल दे उस चमची, (आचमनी) से जल डालता जाय। एक बार पाद्य दे, फिर शुद्धोदक दे। इस प्रकार पूजा करे। इन पाँचों पात्रों का ती नाम पञ्चपात्र है जहाँ

❀ पाद्य का मन्त्र–उष्णोदकं निमलं च सर्व सौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥
दोहा—सर्वेश्वर सुखप्रद सलिल, सब सुगन्ध संयुक्त।
प्रक्षालन पद हित प्रभो, लेहिँ नहीं हौं भक्त॥

Valmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पाँच पात्र न हों, तहाँ एक ही पात्र में पाँचों पात्र की कल्पना करके उसी से पाँचों का काम ले ले। अर्घ्य जल अर्घा से दे।

राजा ने कहा—"हाँ भगवन्! पंचपात्र का अर्थ मैं समझ गया। अब कृपा करके पाद्य से आगे की पूजा विधि बताइये।

४—अर्घ्य

मुनि बोले--"राजन्! पाद्य के पश्चात् अर्घ्य दे। अर्घ्य कहते हैं आदर देने को, यह एक सम्मान की विधि है' अर्घ्य अपने से श्रेष्ठ को दिया जाता है, किन्तु, राजा, ऋत्विक्, जमाता तथा राजपुत्र ये छोटे होने पर भी अर्घ्य के अधिकारी माने जाते हैं। अर्घा में अर्घ्य की सामग्री सहित जल भरकर तीन बार अर्घ्य दे और कहे—"हे देव! यह गन्ध, अक्षत, पुष्पादि सहित अर्घ्य मैं आपको देता हूँ, आप इस अर्घ्य को ग्रहण करें। हे देव! मैं आपके लिये नमस्कार करता हूँ।"* अर्घ्य देकर फिर शुद्धोदक दे। "अर्घ्यं समर्पयामि" यह कहे।

५—आचमन

अर्घ्य के अनन्तर आचमन करने के लिये जल दे। प्राचीन सदाचार था कि मुख को शुद्ध करने के लिये प्रत्येक बात पर आचमन करते थे। अपने साथ पात्र में सदा जल रखते थे। प्रातः उठते ही हाथ पैर धोकर आचमन करते थे। शौच जाकर शुद्ध होकर आचमन करते थे, स्नान के अनन्तर, कहीं जाने पर, स्नान, मलमूत्र के त्याग के अनंतर, अपान वायु के अनंतर, छींक आने पर, जीभ से चाटने पर, संध्यादि कृत्य करने पर, सारांश यह है कि जिन कामों से अशुचि होने की सम्भावना हो सकती

---

* अर्घ्य मंत्र—अर्घ्यं गृहाण देवेश गंधपुष्पाक्षतैःसह।
करुणां कुरु मे देव गृहाणर्घ्यं नमोऽस्तुते॥
दोहा—गन्ध, पुष्प अक्षत सहित, जल लै करुणाधाम।
अर्घ्य ग्रहण अच्युत करैं, तव पद पदुम प्रनाम॥

Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शुद्धोदक भी छोड़ दे। पाद्य देते समय यह कहे—"हे देव ! यह कुछ उष्ण निर्मल सुगन्ध संयुक्त आपके पाद प्रक्षालन के हेतु मैं दे रहा हूँ इसे आप ग्रहण करें।❀

राजा ने पूछा—"भगवन् ! पञ्चपात्र क्या ?"

मुनि बोले—"पूजा करने वाले प्रतिमा के सम्मुख पाँच पात्र रखते हैं। एक बड़े पात्र में पाँच कटोरियाँ ताँबे या चाँदी की चतुर्दल कमल की भाँति रखते हैं, बीच में एक बड़ी चारों ओर चार छोटी ऊपर की में पाद्य का जल दायीं में अर्घ्य का जल, नीचे की में आचमन का जल और बायीं में स्नान का जल, तथा बीच में शुद्ध जल रखते हैं। एक चम्मच रखते हैं। उन कटोरियों में पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय तथा स्नानीय जल उन-उनकी सामग्रियों से मिश्रित भरा रहता है।

राजा ने पूछा—"भगवन् ! पाद्य अर्घ्यादि जलों में कौन-कौन समाग्री डाली जाती है ?"

मुनि बोले—"राजन् ! पाद्य के जल में समा के दाने डालते हैं, दूब विष्णुकान्ता तथा तुलसीदलादि डालते हैं। अर्घ्य के जल में चन्दन, पुष्प, जव, कुश, तिल, सरसो, दूध, दही आदि डालते हैं। आचमन के जल में कर्पूर, लवङ्ग, जाइफल तथा खस आदि सुगन्धित वस्तुएँ डालते हैं। इसी प्रकार स्नान के जल में भी चंदन कर्पूर आदि सुगन्धित द्रव्य डालते हैं। ये सब न हों तो केवल चारों में तुलसीदल चंदन ही डाल दे उस चमची, (आचमनी) से जल डालता जाय। एक बार पाद्य दे, फिर शुद्धोदक दे। इस प्रकार पूजा करे। इन पाँचों पात्रों का ती नाम पञ्चपात्र है जहाँ

❀ पाद्य का मन्त्र–उष्णोदकं निमलं च सर्वं सौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—सर्वेश्वर सुखप्रद सलिल, सब सुगन्ध संयुक्त।
प्रक्षालन पद हित प्रभो, लेहिँ नहीं हौं भक्त॥

Sanskrit University Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पाँच पात्र न हों, तहाँ एक ही पात्र में पाँचों पात्र की कल्पना करके उसी से पाँचों का काम ले ले। अर्घ्य जल अर्घा से दे।

राजा ने कहा—"हाँ भगवन्! पंचपात्र का अर्थ मैं समझ गया। अब कृपा करके पाद्य से आगे की पूजा विधि बताइये।

४—अर्घ्य

मुनि बोले--"राजन्! पाद्य के पश्चात् अर्घ्य दे। अर्घ्य कहते हैं आदर देने को, यह एक सम्मान की विधि है' अर्घ्य अपने से श्रेष्ठ को दिया जाता है, किन्तु, राजा, ऋत्विक्, जमाता तथा राजपुत्र ये छोटे होने पर भी अर्घ्य के अधिकारी माने जाते हैं। अर्घा में अर्घ्य की सामग्री सहित जल भरकर तीन बार अर्घ्य दे और कहे—"हे देव! यह गन्ध, अक्षत, पुष्पादि सहित अर्घ्य मैं आपको देता हूँ, आप इस अर्घ्य को ग्रहण करें। हे देव! मैं आपके लिये नमस्कार करता हूँ।"* अर्घ्य देकर फिर शुद्धोदक दे। "अर्घ्यं समर्पयामि" यह कहे।

५—आचमन

अर्घ्य के अनन्तर आचमन करने के लिये जल दे। प्राचीन सदाचार था कि मुख को शुद्ध करने के लिये प्रत्येक बात पर आचमन करते थे। अपने साथ पात्र में सदा जल रखते थे। प्रातः उठते ही हाथ पैर धोकर आचमन करते थे। शौच जाकर शुद्ध होकर आचमन करते थे, स्नान के अनन्तर, कहीं जाने पर, स्नान, मलमूत्र के त्याग के अनंतर, अपान वायु के अनंतर, छींक आने पर, जीभ से चाटने पर, संध्यादि कृत्य करने पर, सारांश यह है कि जिन कामों से अशुचि होने की सम्भावना हो सकती

---

* अर्घ्य मंत्र—अर्घ्य गृहाण देवेश गंधपुष्पाक्षतैःसह।
करुणां कुरु मे देव गृहाणर्घ्यं नमोऽस्तुते॥
दोहा—गन्ध, पुष्प अक्षत सहित, जल लै करुणाधाम।
अर्घ्य ग्रहण अच्युत करैं, तव पद पदुम प्रनाम॥

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

है, उन सबके अन्त में आचमन करते थे। आचमन के अभाव में बायें कान का स्पर्श कर लेते या सूर्य को देख लेते। अर्घ्य के अनन्तर आचमन आवश्यक है। अतः सुगन्धित जल से तीन बार आचमन करावे और यह कहे—"हे परमेश्वर ! सब तीर्थों के जलों से युक्त सुगन्धित यह निर्मल नीर आपके आचमन के निमित्त मैं दे रहा हूँ। हे भगवन् ! इस जल को ग्रहण करके आप आचमन कर लें।"❀ आचमनीयं समर्पयामि" ऐसा कहकर आचमन करा लें, फिर शुद्ध जल से हाथ धुलावैं।"

६—स्नान जल

आचमन के अनन्तर भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करावे। स्नानीय जल देकर यह विनती करे—"गङ्गा, सरस्वती, रेवा, पयोष्णी, नर्मदा आदि पवित्र सरिताओं का यह जल है। इससे हे देव ! मैं आपको स्नान करा रहा हूँ, जैसे स्नान करने से आप को शान्ति मिलती होगी, वैसे ही मुझे भी शान्ति प्रदान करें।" इन नदियों में से किसी नदी का जल न हो तो किसी भी जल में इन सब नदियों की भावना कर लेनी चाहिये।

स्नान बहुत प्रकार का होता है। दुग्धस्नान, दधिस्नान, घृतस्नान, मधुस्नान, शर्करास्नान, पञ्चामृतस्नान तथा शुद्धोदकस्नान, इनके अतिरिक्त महौषधि, दिव्यौषधि आदि से भी स्नान

❀ आचमन का मंत्र—सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगंधि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
उल्लाला—है अति निर्मल नीर यह, गंधयुक्त सब तीर्थमय।
करहिँ आचमन प्रेमतैं, परमेश्वर हे प्रेममय॥
❀ जल स्नान मंत्र—गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे॥
दोहा—गंगादिक सरितानि तैं, लायौ जल अति शुद्ध।
मज्जन हे भगवन् ! करैं, होवै मम मति शुद्ध॥

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कराये जाते हैं, ये सब स्नान के ही अन्तर्गत हैं, इन सब में पञ्चामृतस्नान का अत्यधिक माहात्म्य है, अतः अब हम पंचामृतस्नान की ही विधि बताते हैं। शुद्धोदक के अनन्तर दुग्धस्नान करावे।

दुग्धस्नान

शुद्ध छने हुए दूध से भगवान् को स्नान करावे और यह विनती करे—"हे देव। यह दूध कामधेनु से उत्पन्न हुआ है, समस्त प्राणियों का परम जीवन है, यज्ञ यागादि का कारण है और यह परमपावन है अतः इसे मैं आपके स्नान के हेतु अर्पण कर रहा हूँ।" ऐसा कहकर दुग्ध से स्नान करावे। कहे—"दुग्धस्नानं समर्पयामि।" तदनन्तर दधि से स्नान करावे।

दधिस्नान

दही को लेकर उससे स्नान करावे और यह कहे—"हे देव! यह दही दूध से उत्पन्न हुआ है। चन्द्रमा के समान शुभ्र और स्वच्छ है, कुछ खटाई लिये हुए मीठा है इसे मैं आपके स्नान के निमित्त लाया हूँ, कृपा करके आप इसे ग्रहण करें।"* ऐसी प्रार्थना करके "दधिस्नानं समर्पयामि" कहकर दही के स्नान के अनन्तर शुद्धोद्धक से स्नान करावे, फिर घृतस्नान करावे।

---

* दुग्धस्नान का मंत्र—कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषांजीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

दोहा—धेनु प्रभव जीवन सकल, प्राणिनि को आधार।
स्नान हेतु शुभ दुग्ध की, अरपूँ अच्युत धार॥

* दधिस्नान का मंत्र—पयपस्तु समुद्भुतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—दुग्धभूत सुन्दर मधुर, स्वच्छ अम्ल अति स्वाद।
स्वीकारैं दधि न्हान हित, भक्त पाँइ परसाद॥

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

घृतस्नान

घृत को लेकर उससे स्नान करावे और यह प्रार्थना करे—"हे भगवन्! यह घृत नवनीत से उत्पन्न हुआ है, प्राणीमात्र को सन्तोष देने वाला है। यज्ञ का यह प्रधान कारण है, घृत के बिना यज्ञादि सम्पन्न नहीं होते, इस परम पवित्र घृत को स्नान के निमित्त आपके लिये अर्पण करता हूँ, हे पूज्य! आप इसे ग्रहण करें।"❀ 'घृतस्नानं समर्पयामि' ऐसा कहकर घृत स्नान करावे 'पुनर्जलस्नानं समर्पयामि' ऐसा कहकर फिर जल से स्नान करावे। तदनन्तर शहद से स्नान करावे।

मधुस्नान

मधु को लेकर उसकी धार से स्नान करावे और यह प्रार्थना करे—"हे देव! यह शहद वृक्षों के पुष्पों से उत्पन्न हुआ है। बड़ा ही स्वादिष्ट है, मधुर है, दिव्य है तथा तेज और पुष्टिकारक है। उसी को मैं आपके स्नान के निमित्त अर्पण करता हूँ, आप इसे ग्रहण करें।"❀ 'मधुस्नानं समर्पयामि' ऐसा कहकर मधुस्नान कराके पुनः जलस्नान करावे। तदनन्तर शर्करा से स्नान करावे।

शर्करास्नान

ईख का रस हो या शक्कर को जल में घोलकर छानकर उसी से स्नान करावे और प्रार्थना करे "यह शर्करा ईख के सार से बनी

❀ घृतस्नान मंत्र—नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—नैंनू तैं उत्पन्न शुभ, करै सबनि सन्तोष।
स्नान हेतु घृत देहुँ प्रभु, स्वीकारैं निरदोष॥

❀ शहदस्नान मन्त्र—तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरंमधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—तरु पुष्पनि सम्भूय मधु, मधुर स्वाद युत श्रेष्ठ।
तेज पुष्टिकर न्हाइ हित, ग्रहन करैं सुर ज्येष्ठ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

है। यह पुष्टि करने वाली है, मैल को हरने वाली है और दिव्य है। इसे मैं स्नान के निमित्त दे रहा हूँ, कृपा करके आप इसे ग्रहण करें।"❀'शर्करास्नानं समर्पयामि' पुनर्जलस्नानं समर्पयामि' ऐसा कहकर शर्करा के स्नान के अनंतर शुद्ध जल से स्नान करावे। फिर इन पाँचों वस्तुओं से मिले पंचामृत से स्नान करावे।

पञ्चामृत स्नान

दूध, दही, घृत शहद और शर्करा इन पाँचों को मिलाने से पञ्चामृत बन जाता है। इनसे पृथक्-पृथक् स्नान करा चुके, अब इन पाँचों को एक करके इनसे स्नान करावे और यह प्रार्थना करे–"हे देव ! दूध, दही, घृत, शहद और शर्करा इन पाँच अमृत रूप वस्तुओं से बने पञ्चामृत को मैं आपके स्नान के निमित्त लाया हूँ। आप इसे ग्रहण करें।"❀ 'पंचामृत स्नानं समर्पयामि' ऐसा कहकर पंचामृत स्नान करावे फिर शुद्धोदक स्नान करावे।

शुद्धोद्धक स्नान

जिस पात्र में पञ्चामृत से स्नान कराया है, उसमें से प्रतिमा को निकाल ले और शनैः-शनैः श्रीविग्रह से पञ्चामृत की जो वस्तु लगी हो उन्हें हटावें और शुद्ध जल से स्नान कराता हुआ यह प्रार्थना करे—"जो पापों को हरने वाला मन्दाकिनी का पवित्र जल है, उसकी कल्पना मैं इसी जल में किये लेता हूँ, अतः आप इस शुद्धोद्धक को स्नान के निमित्त ग्रहण

❀ शर्करा स्नान मन्त्र—इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—पुष्टि कारिनी मधुर अति, शक्कर मज्जन हेतु।
मैल हारिनी देहुँ हौं, स्वीकारें जग-सेतु॥

❀ पंचामृत स्नान मन्त्र–पंचामृतं मयानीतं पयोदधि समन्वितम्।
घृतं मधुशर्करया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—दूध, दही, घृत, मधुर मधु, शक्कर पञ्च मिलाय।
पञ्चामृत निरमित कर्‌यो, न्हावें प्रभु हरषाय॥

eal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

करें।"❀ 'शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि' कहकर शुद्धोद्धक से स्नान करावे।गंध से भी स्नान करावे, पुनः जल से स्नान करावे, वस्त्र से भलीभाँति पोंछकर आसन पर पधरा दे। फिर वस्त्र अर्पण करे।

७—वस्त्र उपवस्त्र

स्नान के अनन्तर वस्त्र पहिनाये जाते हैं। पहिले दो वस्त्र पहिनते थे, एक नीचे का वस्त्र एक ऊपर का वस्त्र, एक उपवस्त्र हाथ मुँह पोंछने के लिये रखते थे। दो वस्त्र भगवान् को अर्पण करे और यह प्रार्थना करे—"हे देव! वस्त्र सम्पूर्ण भूषणों से श्रेष्ठ हैं, सुन्दर हैं, मनोहर हैं, इनसे लोकलज्जा निवारण होती है। ऐसे ये दो वस्त्र आपके निमित्त में अर्पित कर रहा हूँ, आप इन्हें स्वीकार करें।"❀

ऐसा कहकर 'वस्त्रं उपवस्त्रञ्च समर्पयामि' वस्त्र उपवस्त्र अर्पण कर दे। वस्त्र के अभाव में पुष्प अर्पण कर दे अथवा अक्षत अर्पण कर दे। तदनन्तर यज्ञोपवीत अर्पण करे। वस्त्रान्ते आचमनीय समर्पयामि, वस्त्र अर्पण के अनन्तर आचमन करावे।

८—यज्ञोपवीत

शुद्ध बना हुआ यज्ञोपवीत लेकर उसे भगवान् को अर्पण करे और प्रार्थना करे—"हे प्रभो! यह यज्ञोपवीत नव तन्तुओं से युक्त शुभ्र और परम पुनीत है, इसे आपके निमित्त अर्पित कर रहा हूँ,

---

❀ शुद्धोदकस्नान मंत्र—मंदाकिन्यास्तुतद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—पाप हरन पावन परम, सुरसरि को शुभ नीर।
जा जलमहँ कल्पित कर्‍यो, न्हावें हे रनधीर॥

❀ वस्त्रार्पण मन्त्र—सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपातिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—सुन्दर सुखकर शुद्ध शुभ, पट पहिनें प्रभु आज।
लोकलाज वारण निमित, स्वीकारैं सुरराज॥

l Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

आप इसे ग्रहण करें।'❀'यज्ञोपवीतं समर्पयामि' कहकर यज्ञोपवीत निवेदन करे और आचमन करे। तदनन्तर चन्दन अर्पण करे।

९—गन्ध

सुन्दर सुगन्धयुक्त चन्दन जिसमें केशर, कर्पूर तथा अन्य सुगन्धित वस्तु पड़ी हों, उसे भगवान् के श्रीविग्रह में लेपन करे और यह प्रार्थना करे—"हे सुरश्रेष्ठ! यह श्रीखण्ड चन्दन दिव्य है, गन्ध से युक्त है- मनोहर है, शरीर पर विशेष रूप से लेपन किया जाता है, इसे आप ग्रहण करें।"❀ 'गन्धं समर्पयामि' ऐसा कहकर चन्दन लगावे। चन्दन के अनन्तर अक्षत अर्पण करे, भगवान् विष्णु को अक्षत अर्पण करना निषेध है, अतः सफेद तिल अथवा जव अर्पण करे।

१०—अक्षत

अक्षत चतुर्भुज विष्णु के लिये निषेध है, द्विभुज राम, कृष्ण के ऊपर अक्षत चढ़ाये जा सकते हैं, अथवा सफेद तिल अक्षत के स्थान पर चढ़ावे और यह विनय करे, 'हे देवाधिदेव! ये सुन्दर अक्षत जो केशर में रँगे हुए हैं, मैं इन्हें भक्तिपूर्वक आपको निवेदन कर रहा हूँ, आप इन्हें कृपया ग्रहण करें।"❀ "अक्षतान्

❀ यज्ञोपवीत मन्त्र—नवभिस्तन्तुसंयुक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

दोहा—त्रिगुण तन्तु नव युक्त शुभ, है अति परम पुनीत।
हे परमेश्वर प्रेम तैं, स्वीकारैं उपवीत॥

❀ गन्ध मन्त्र—श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—गन्धयुक्त अति मनहरन, लेपन अति रमनीय।
स्वीकारें चन्दन प्रभो, परम दिव्य कमनीय॥

❀ अक्षत मंत्र—अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

दोहा—अक्षत कुंकुमतैं रँगे, नहिँ टूटे हे ईश।
स्वीकारैं अति कृपा करि, लायौं हौं जगदीश॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समर्पयामि' ऐसा कहकर चन्दन पर अक्षत लगा दे, ऊपर अक्षत छिड़क दे। अक्षतों के अनन्तर पुष्प चढ़ावे।

११—पुष्प

सुन्दर सुगन्धित पुष्प ले आवे, विष्णु भगवान् को धतूरा, आक अथवा जिनमें सुगन्धि न हो, ऐसे पुष्प न चढ़ाना चाहिये। कुन्द को शिवजी पर न चढ़ाना चाहिये। देवी को मदार के पुष्प तथा सूर्य को तगर के पुष्प निषेध हैं। जो पुष्प जल में धो दिये जाते हैं, निर्माल्य हो जाते हैं, उन्हें भी देवता पर न चढ़ावे। पहिनने की धोती में लाया पुष्प, अरण्य के पत्तों में लपेटकर लाया पुष्प तथा दोनों हाथों की केवल अंजलि में तोड़कर लाये पुष्पों को देवता पर न चढ़ावे, शुद्ध पुष्पों को किसी पात्र में, पत्ते, दोने अथवा शद्ध वस्त्र में तोड़कर लावे और भगवान् पर चढ़ाकर यह प्रार्थना करे—"हे प्रभो! मालती आदि के सुन्दर सुगन्धित ये असनीया पुष्प मैं आपकी पूजा के निमित्त लाया हूँ, इन्हें आप ग्रहण करें।'❀

'इति पुष्पाणि समर्पयामि' कहकर पुष्प चढ़ा दे फिर पुष्प माला चढ़ावे।

पुष्पमाला

सुन्दर सुगंधित पुष्पोंसे ग्रथित माला को लेकर देवताके कंठ में पहिनावे और यह प्रार्थना करे "हे परमेश्वर! सुगंधित पुष्पोंके समूहसे ग्रथित यह शुभ्र माला मैं आपकी शोभा बढ़ानेके निमित्त

❀ पुष्पों का मंत्र–माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥
दोहा—ऋतु महँ जैसे मिलि सके, पुष्प गन्धयुत भव्य।
पाटल, चम्पक, मल्लिका, स्वीकारें अति दिव्य॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

अर्पण करता हूँ, इसे आप स्वीकार करें ।"❀ 'इति पुष्पमालां समर्पयामि' इस प्रकार पुष्पमाला को पहिनाकर तुलसीदल भगवान् को अर्पण करे ।

तुलसीदल

तुलसीजी के पत्ते न तोड़े । जिसमें चार छै पत्ते लगे हों ऐसे दल को तोड़े । गणेशजी पर तुलसीदल, चन्दन चढ़ाना निषेध है । भगवान् के चरणों में तुलसीदल अर्पित करे और यह प्रार्थना करे- "हे देव ! यह तुलसी सुवर्ण के सदृश है, इसकी मञ्जरी रत्नों के समान है, आपकी अत्यन्त प्यारी होने से 'हरिप्रिया' नाम से यह प्रसिद्ध है, भुक्ति और मुक्ति दोनों को ही प्रदान करने वाली यह है, ऐसी इस तुलसी को मैं आपके चरणों में अर्पण करता हूँ ।"❀ 'तुलसीदलानि समर्पयामि' कहकर तुलसीदल चढ़ावे । तुलसीदल के अनन्तर विल्वपत्र भी भगवान् को अर्पण कर सकते हैं । किन्हीं का मत है; विल्वपत्र शिवजी को ही अर्पण करे, वैसे तो तुलसी, विल्व, निम्ब, जंबीर और आँवला इन पाँचों का ही नाम विल्व है । तुलसी चढ़ाने के अनन्तर इच्छा हो विल्वपत्र चढ़ावे, इच्छा हो न चढ़ावे । हाँ, सूर्यनारायण को विल्व न चढ़ावे, चढ़ाना ही हो तो डंडी तोड़कर उन्हें भी चढ़ा सकते हो ।

❀ पुष्पमाला मंत्र—सुरभि पुष्प निजयैः ग्रथितां शुभ मालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

दोहा—माला सुमननि तैं गुँथी, माला शोभा कण्ठ ।
करें ग्रहन करुना अयन, अच्युत अज बैकुण्ठ ॥

❀ तुलसी मन्त्र—तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपाञ्च मञ्जरीम् ।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥

दोहा—हेम रूप तुलसी कही, रत्न मञ्जरी रूप ।
भुक्ति मुक्ति दैंनी प्रिया, प्रभुलैवें सुरभूप ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दूर्वा

हरी-हरी दूब के अंकुर लेकर भगवान् को अर्पण करे और यह प्रार्थना करे—'हे दूर्वे ! तुम विष्णु आदि सभी देवताओं को अत्यन्त ही प्यारी हो, क्षीरसागर से तुम भगवान को अर्पित होकर उत्पन्न हुई हो। तुम वंश को बढ़ाने वाली हो।❀ 'दुर्वाकुराणि समर्पयामि' ऐसा कहकर दूब चढ़ावे। देवी के लिये दूब निषेध है।

१२—धूप

धूप अनेक प्रकार की बनती हैं, एक तो अगरबत्ती बनी बनाई धूप आती है। एक घर में बनाते हैं, एक गुग्गुल, कर्पूर, घृत और चन्दन का चूरा इसकी बहुत सुगंधित धूप होती है। उस में अगर, तगर, खस, छार, छबीला तथा नगरमोथा आदि सुगंधित द्रव्य और मिलाने से देवताओं को अत्यन्त प्रिय हो जाती है। धूपबत्ती हो तो उसे जलाकर फिर बुताकर रखें, जिससे धूँआ निकलता रहे। यदि चूर्ण हो तो जलते कोयलों पर डालकर उसका धूआँ करे। फिर यह प्रार्थना करें—'यह धूप वनस्पतियों के रस से उत्पन्न हुई है, गन्ध से युक्त है, अत्यन्त उत्तम गन्धवाली है। सभी देवता इसे सूँघते हैं। हे देवाधिदेव ! आप मेरे द्वारा दी हुई इस धूप को स्वीकार करें।'❀ 'इति धूपं आघ्रापयामि' ऐसा

❀ दूर्वा मन्त्र—विष्णवादि सर्वदेवानां दूर्वो त्वं प्रीतिदा यदा।
क्षीरसागरसंभूते वंशवृद्धकरी भव॥
दोहा—कोमल मनहर हरी अति, दूर्वा मङ्गल खानि।
लेहि अमृतप्रभवा प्रभो, दास आपनो जानि॥

❀ धूप मन्त्र—वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
दोहा—द्रव्य सुगन्धित युक्त करि, कान्नीं निर्मित धूप।
सूँघें सब सुर सुखद शुभ, स्वीकारें सुरभूप॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

कहकर धूप दे। पुनः समीप में स्थापित पूजित दीप को दिखावे।

१३—दीप

देव पूजन में घृत का दीपक प्रशस्त है। घृत का न हो तो तैल का ही जलावे। जब तक पूजन हो, साक्षी रूप में दीपक प्रज्वलित रखे। भगवान् से यह प्रार्थना करे—"हे देवेश! घृत में भिगोकर यह बत्ती मैंने अग्नि द्वारा प्रज्वलित की है। आप तो तीनों लोक के अंधकार को दूर करने वाले हैं, फिर भी मेरे द्वारा अर्पित किये हुए इस घृत के दीपक को आप स्वीकार करें।"❀ 'इति दीपं दर्शयामि' कहकर दीपक निवेदन करे। दीप अर्पण करने के अनन्तर शुद्ध जल से हाथ धोले। फिर नैवेद्य अर्पण करे।

१४—नैवेद्य

नैवेद्य में मीठी ही वस्तु लगावे, लड्डू हो, हलुआ हो, मालपुए हों, खोए की बनी मिठाइयाँ हों, और भी जो घृत से बनी वस्तु हो उन्हें नैवेद्य में लगावे। न हो तो दही चीनी ही लगा दे। मेवा, फल आदि को नैवेद्य के स्थान में लगा सकते हैं। नैवेद्य को समुख रखकर वस्त्र से ओट करके यह प्रार्थना करे—'हे देव! घी, शक्कर से संयुक्त यह अत्यन्त स्वादिष्ट मीठा नैवेद्य है, उपहार से संयुक्त है, इसे आप ग्रहण करें।'❀ 'नैवेद निवेदयामि' ऐसा कहकर भगवान् के आगे रखे। सम्मुख रखते समय

❀ दीप मन्त्र—आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥

दोहा—घी में बोरी वत्ति वर, दई अग्नि तैं जोरि।
जगतम नाशक देव यह, दीपक देखें दौरि॥

❀ नैवेद्य मन्त्र—शर्करा घृत संयुक्तं नैवेद्य मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—घी शक्कर संयुक्त यह, मधुर सहित उपहार।
ग्रहण करैं नैवेद्य प्रभु, अधम उधारन हार॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उसमें तुलसी अवश्य छोड़ दे। तुलसी बिना भगवान् ग्रहण नहीं करते। तुलसी उनकी एक प्रकार की छाया है। जिसमें तुलसी पड़ी रहती है, उसे वे समझ लेते हैं, यह हमारे लिये है। इस प्रकार नैवेद्य अर्पण करके तीन बार आचमन करावे।

आचमन

नैवेद्य के अनन्तर तीन बार आचमन कराये। कहे-"आचमनीयं समर्पयामि, शुद्धाचमनीयं समर्पयामि, शुद्धाचमनीयं समर्पयामि।" आचमन का जल देकर प्रार्थना करे--"हे देव! यह जल अत्यन्त तृप्ति करने वाला है, सुगन्धयुक्त है, इसे आप इच्छानुसार पेट भरके पीलें, क्योंकि आपके तृप्त हो जाने पर सम्पूर्ण जगत् तृप्त हो जायगा। वास्तव में तो आप तो नित्यतृप्त हैं सनातन हैं।"

ऋतुफल

फिर ऋतु के अनुसार जो भी फल मिल जाय, भगवान् को अर्पण करे और निवेदन करे—"हे देव! यह फल मैंने आपके सम्मुख रख दिया है, इससे मुझे जन्म जन्मान्तरों में सफलता प्राप्त होती रहे।" 'फलं समर्पयामि' कहकर फिर आचमन करावे।

ताम्बूल पूङ्गीफल

नैवेद्य के अनन्तर मुख शुद्धि के लिये पान सुपारी अर्पण करे

❀ आचमन मन्त्र–अति तृप्तिकरं तोयं सुगन्धिं च पिवेच्छया।
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तां नित्य तृप्ते महात्मनि॥
दोहा—भोजनि करि पय पियो प्रभु, परम तृप्ति के साथ।
नित्य तृप्त तुम अखिलपति, अचर सचर के नाथ॥
❀ फल मन्त्र—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरातस्तव।
तेन मे सुफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥
दोहा—तुम दाता सब फलनि के, ये कछु केला सेव।
सफल करो इच्छा सकल, अरपित ये फल देव॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

और यह प्रार्थना करे—"ये पान के पत्ते बड़े दिव्य हैं, इनमें सुपारी तथा इलायची आदि का चूर्ण भी पड़ा है। हे देव ! आप इस सुपारी सहित पान को ग्रहण करें।"❀ ऐसा कहकर पान अर्पण करे। तदनन्तर दक्षिणा द्रव्य भगवान् के सम्मुख रखे।

१५—दक्षिणा

सुवर्ण चाँदी अथवा ताँबे की जैसी भी दक्षिणा रखने की अपनी शक्ति हो अथवा अक्षत, पत्र, पुष्प फल जिसकी दक्षिणा प्राप्त हो उसको अर्पण करके यह प्रार्थना करे—"पूजा के फल की वृद्धि के हेतु हे देव ! यह दक्षिणा है इसे तुम्हारे आगे स्थापित करता हूँ, इससे मुझ पर प्रसन्न हों और मेरे समस्त मनोरथों को पूर्ण करो।"❀ 'इति दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि' ऐसा कहकर दक्षिणा रखे।

१६—आरती

अब पूजन समाप्त होने पर आरती करे। एक बत्ती, तीन बत्ती, पाँच बत्ती जलाकर भगवान् की आरती करे। आरती चरणों से की जाती है, चरणों में चार बार आरती उतारे। नाभि में दो बार, मुख की तीन बार। सर्वाङ्ग की कम-से-कम सात बार और अधिक अपनी जितनी इच्छा हो। आरती करते समय भगवान् की विनय करता जाय और कहता जाय—"चन्द्रमा,

---

❀ ताम्बूल पुङ्गीफल मंत्र–पुङ्गीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलाचूर्णादि संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम्॥

दोहा—सुन्दर सुखद इलायची, सहित सुपारी पान।
मुखशोधन हित देहुँ प्रभु, स्वीकारैं भगवान्॥

❀ दक्षिणा मन्त्र—पूजाफलं समृद्ध्यर्थं दक्षिणा च तवाग्रतः।
स्थापिता तेन मे प्रीतिः पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

दोहा—जो कछु दाता तुम दई, विनय दक्षिणा देव।
अवसि तारि अपनायँगे, यही आपकी टेव॥

l Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सूर्य, पृथ्वी, विजली, अग्नि तथा सम्पूर्ण ज्योति तुम ही हो। प्रभो! मेरी आरती को ग्रहण करो।"❀ बत्ती की आरती के अनन्तर कर्पूर की आरती करे।

कर्पूर आरती

कर्पूर जलाकर आरती करे और विनती करे—"हे भगवन्! यह कर्पूर कदली के खम्भ से उत्पन्न होता है, इसका प्रदीप बनाकर मैं आरती कर रहा हूँ। हे प्रभो! आप मुझे देखें और मुझे वरदान देने वाले हों।"

स्तुति पुष्पाञ्जलि

आरती के अनन्तर शङ्ख में जल भरकर भगवान् के ऊपर घुमाकर उस जल को भक्तों के ऊपर छिड़के, तदनंतर स्तुति करे। स्तुति के अनेक संस्कृत प्राकृत पद हैं, उनमें से जिसे जो प्रिय हों, उन्हीं पदों से मंत्रों तथा श्लोकों से स्तुति करे और कहे, 'हे देव! तुम ही मेरे माता, पिता, बंधु, बान्धव, मित्र, विद्या तथा धन हो। कहाँ तक कहूँ तुम ही देव! मेरे सर्वस्व हो। मैं पापी हूँ, कर्म जो करता हूँ वह भी पापमय। पाप से ही उत्पन्न हूँ, मेरा मन भी पापमय है। आपका नाम हरि है, आप सभी पापों का हरण करने में समर्थ हैं, अतः हे पुण्डरीकाक्ष! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो, मुझे निष्पाप विशुद्ध बना दो। हे महापुरुष! हे प्रणतपाल! आपके चरणारविन्द सदा ध्यान करने योग्य हैं, पराभव को नाश करने

❀ आरती मंत्र—चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्य दाग्निस्थैव च।
त्वमेव सर्व ज्योतीषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

आरती पद—आरती श्रीहरिकी कीजै। भक्तितैं प्रेमामृत पीजै॥
हमारे हरिजी अति प्यारे, हमारे नयननिके तारे।
हमारे वेई रखवारे, चरनमें तिनके चित्त दीजै॥१॥
दिवसमें वेई रवि राजें, रातमें शशि बनिकें भ्राजें।
तेज सब लखि तिनकूँ लाजें, नेहमें रहें सदा भीजें॥२॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

वाले हैं, मोहनाशक हैं, इष्ट वस्तु को प्राप्त करने वाले हैं, तीर्थ स्वरूप ही हैं, शिव और ब्रह्मादि देव सदा जिनकी वन्दना करते हैं, जो शरण देने वाले, भृत्यों के दुखों को दूर करने वाले हैं तथा संसार समुद्र के लिये पोत रूप हैं। ऐसे आपके पादपद्मों को मैं प्रणाम करता हूँ। हे महापुरुष ! हे धर्मिष्ठ ! आपके चरणारविन्दः पिता-दशरथ के वचनों को मानकर, ऐसी दुस्त्यज राज्यलक्ष्मी को छोड़कर वन के लिये चले गये। जिसकी इच्छा देवगण भी करते हैं, वे ही चरणारविन्द अपनी प्रिया सीताजी के अभीष्ट कपट-मृग को मारने उसके पीछे-पीछे दौड़े, उन्हीं आपके पादपद्मों को मैं प्रणाम करता हूँ। श्रीकृष्ण के लिये नमस्कार है, वासुदेव के लिये नमस्कार है, श्रीहरि के लिये नमस्कार है, परमात्मा के लिये नमस्कार है, प्रणतों के क्लेश नाश करने वाले के लिये नमस्कार है, श्रीगोविन्द के लिये बार-बार नमस्कार है।❀ यह आवश्यक नहीं

भक्तगन मिलिकें सब आओ, नाम गुन प्रभुजी के गाओ।
पूजिकें तुम सब फल पाओ, प्रेम तैं चरनामृत लीजै ॥३॥

❀स्तुतिमंत्र–त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेव देव ॥१॥

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरोभव ॥२॥

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहम्
तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवब्धिपोतम्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥३॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरे प्सितराज्यलक्ष्मीम्
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥४॥

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥५॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कि इसी प्रकार स्तुति करे, जिन पदों से जिन वाक्यों से हृदय गद्गद हो जाय, जो पद-वाक्य हृदय पर अधिक प्रभाव डालते हों, जो अन्तःकरण को स्पर्श करते हों, उन्हीं से स्तुति करे।

पुष्पाञ्जलि

स्तुति के अनन्तर हाथ में जो पुष्प हों उन्हें यह कहता हुआ कि 'इस समय जो भी सुगन्धि पुष्प मुझे प्राप्त हो सके हैं, उन्हीं की पुष्पाञ्जलि मैं आपको अर्पण कर रहा हूँ, हे परमेश्वर ! इसे आप ग्रहण करें।'❀—भगवान् के चरणों में चढ़ा दे पुष्पाञ्जलि के अनन्तर साष्टाङ्ग प्रणाम करे।

दोहा—आयो तुमरी शरनमहँ, हे शरणागत नाथ।
बह्यो जाउँ भव सिन्धुमहँ, पकरो मेरो हाथ ॥१॥
कबतैं हौं भटकत फिरूँ, प्रभु नहिँ दीखत पार।
कृपा करो करुना अयन, तव होवे उद्धार ॥२॥
स्वारथ के सबई सगे, कोइ न पूछत बात।
मेरे तुमई एक हो, मात तात अरु भ्रात ॥३॥
जाति,वरन,कुल,शील,बल,तैं नहिँ रीझैं श्याम।
कृपासाध्य जसुमतितनय, व्रजबल्लभ घनश्याम ॥४॥
प्रभो ! पाप नित प्रति करूँ, मनतैं सोचूँ पाप।
सकल पाप नसि जायँ तब,जब हिय आओ आप ॥५॥
अघहारी भव दुख दलन, प्रणतपाल अभिराम।
वन्दित अज हर सुरनितैं, तव पद पदुम प्रनाम ॥६॥
जो तजि सुर इच्छित विभव,वन-वन फिरत ललाम।
दयित दलत माया मृगनि, तिनिपद पदुम प्रनाम ॥७॥
कृष्ण, कृपानिधि कमलतनु, वासुदेव, हरि श्याम।
प्रणतपाल परमेश प्रभु, पुनि-पुनि करूँ प्रनाम ॥८॥

पुष्पाञ्जलि मंत्र—नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

प्रणाम

देवता को प्रणाम करने के कई भेद हैं। प्रणाम का अर्थ है, प्रणत हो जाना, नव जाना। एक प्रणाम तो यह है, हाथ जोड़कर सिर झुकाकर प्रणाम करना, दूसरा पंचाङ्ग प्रणाम है। दोनों हाथ दोनों घुटने और सिर इन पाँचों अङ्गों को भूमि में लगाकर प्रणाम करे। एक साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम होता है। जैसे डण्डा भूमि पर लेट जाता है वैसे ही सब अङ्गों से भूमि पर लोट जाना, हाथों को आगे कर देना। यह प्रणाम आठ अङ्गों से किया जाता है–दो पैर, दो हाथ, हृदय, मस्तक, मन और वाणी, इसीलिये, इसे प्रणाम कहते हैं। स्त्रियों के लिये साष्टाङ्ग प्रणाम करना निषेध है, उनकी छाती भूमि में नहीं लगनी चाहिये। चरणों में प्रणाम करते समय सिर को चरण पर रखें, दायें हाथ से दायाँ चरण और बायें हाथ से बायाँ चरण छूकर कहे—"हे प्रभो! जिसमें मृत्यु रूप ग्राह मुँह फाड़े बैठा है, ऐसे इस संसार सागर से मैं डरा हुआ हूँ। मैं प्रपन्न हूँ आपके चरण में आया हूँ, अतः आप मेरी रक्षा करें।"* इस प्रकार प्रणाम करके फिर प्रदक्षिणा करे।

प्रदक्षिणा

पूजन के अनन्तर प्रदक्षिणा करे। प्रदक्षिणा कहते हैं अपने दायें हाथ से चारों ओर घूमने को। प्रदक्षिणा सामान्यतया तीन की जाती हैं, विष्णु की चार करे। शिवजी की आधी परिक्रमा बताई है। शिवजी की जलहरी को लाँघना निषेध है। एक सौ

दोहा—सुमन सुगन्धित समय के, अंजलि अरपूँ ईश।
सदय होहिँ स्वीकृत करें, जगन्नाथ जगदीश॥

प्रणाम मंत्र—पादयोः पतितं दीनं भक्तिहीनं निराश्रितम्।
प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्यु ग्रहार्णवात्॥

दोहा—मृत्यु मकर भव सिन्धुके, तैं हौं हूँ अति भीत।
पैरनिमहँ प्रभुजी परयो, अभय करें रिपुजीत॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आठ भी परिक्रमा करते हैं। प्रदक्षिणा करते-करते यह कहता जाय "जो भी कुछ जन्म के, पूर्व जन्म के किये हुए पाप होंगे वे सब प्रदक्षिणा करते समय पद-पद पर नष्ट हो जायँगे।"❀ इस प्रकार प्रदक्षिणा करे।

क्षमा-प्रार्थना

पूजा तो समाप्त हो गई, अब पूजा में त्रुटि रह जाना स्वाभाविक ही है, क्योंकि भगवान् पूर्ण हैं, मनुष्य अपूर्ण है। पूर्ण की अपूर्ण पूजा करेगा तो कितना भी ध्यान रखे, कुछ-न-कुछ दोष, त्रुटि, अपराध बन ही जाता है, उसे पूर्ण ही, पूर्ण कर सकते हैं। अतः दोष निवारणार्थ प्रार्थना करे—"हे जनार्दन ! हे देव ! मन्त्र से हीन, क्रिया से हीन तथा भक्ति से हीन जो भी मैंने पूजा की है, वह अपूर्ण पूजा आपकी अनुग्रह से परिपूर्ण हो जाय। मैं आवाहन की विधि नहीं जानता, विसर्जन करना भी नहीं जानता और न विधिवत् पूजा करना जानता हूँ। अतः जो कुछ अपराध बन गया हो उसे परमेश्वर ! क्षमा करो। हे परमेश्वर आपके अतिरिक्त मेरी अन्य कहीं शरण नहीं है। आप ही एकमात्र मेरी शरण हो। इसलिये कारुण्य भाव से मेरी रक्षा करो।❀

❀ प्रदक्षिणा मंत्र—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणया पदे पदे॥
दोहा—जो जो अघ कीये कठिन, जनम जनम के माहिँ।
करत प्रदिक्षण ते सकल, पग-पग पै नसि जाहिँ॥

❀ क्षमा प्रार्थना के मंत्र—मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत् पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

l Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

समर्पण

जो भी भजन पूजन तथा कर्म करे, अन्त में उसे भगवान् को ही अर्पण कर दे, क्योंकि भगवान् अनन्त हैं, उनके भण्डार में पहुँचने पर भी वह अनन्तता में मिल जायगा। अतः क्षमा प्रार्थना के अनन्तर कहे—"तन से, मन से, वचन से, इन्द्रियों से, बुद्धि से तथा अहङ्कार के वशीभूत होकर मैंने जो भी कार्य किये हैं अथवा करता हूँ उन सबको श्रीमन्नारायण को समर्पण किये देता हूँ, इस पूजन से श्रीमन्नारायण विष्णु भगवान् प्रसन्न हों।"❀

विसर्जन

जिन देवताओं का आवाहन किया जाता है, उनका विधिवत् पूजन करते हैं, फिर अन्त में उत्तर पूजन करके उन्हें विदा करते हैं, उनका विसर्जन करते हैं। नित्य पूजन के चित्रपट में, शालग्राम में, प्रतिष्ठित मूर्तियों में न आवाहन किया जाता है न विसर्जन, वे तो उनमें अर्चा विग्रहवतार रूप से नित्य ही विराजमान हैं। उन्हें न बुलाते हैं न विदा करते हैं। नित्य प्रतिष्ठित होने से उनका पूजन ही करते हैं। जिनका विसर्जन करना हो, उनकी गन्धाक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य से उत्तर पूजा करके विसर्जन करे और यह

दोहा—नहीं भक्ति मो में विभो, मन्त्र क्रिया नहिँ ज्ञान।
जो जो त्रुटि प्रभुजी रही, क्षमा करें जड़ जान॥
आवाहन अरु विसर्जन, पूजन ज्ञान न मोइ।
कृपासिन्धु की कृपातें, सब परिपूरन होइ॥
अन्य शरन मेरी नहीं, गही तुम्हारी शरन।
दयासिन्धु करिबे दया, अपनाओ दुख हरन॥

❀ समर्पण के मन्त्र—कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा नुसृतस्वभावात्। करोमि यत्तत् सकलं परस्मै नारायणयेति समर्पयामि॥ अनेन पूजनेन श्रीमन्नारायण विष्णु भगवान् श्रीकृष्ण परमात्मा प्रीयताम्। इदं न मम॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

कहें—'हे सुरश्रेष्ठ ! परमेश्वर ! इष्टकाम की समृद्धि के निमित्त तथा फिर जब हम आवाहन करें तब आने के निमित्त आप अपने स्थान को जायँ।'❀ ऐसा कहकर अक्षत छोड़ दे। भगवान् चले गये।

निर्माल्य धारण

भगवान् पर चढ़ी प्रसादी माला, उनके चरणों पर चढ़ी तुलसी तथा पुष्पों को लेकर सिर पर धारण करे, चन्दन को मस्तक पर लगावे और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—'हे भगवन् ! आपकी भोगी हुई माला, आपके श्रीअङ्ग पर चढ़ाये चन्दन तथा आपके वस्त्र और अलङ्कारों को धारण करने से और आपका अवशिष्ट उच्छिष्ट प्रसादी भोजन करके हम सब आपके दास आपकी दुरत्यया माया को अवश्य ही जीत लेंगे।" इस प्रकार प्रसादी, माला, फूल, चन्दन ग्रहण करें।❀

तुलसी ग्रहण

भगवान् के चरणों में चढ़ी तुलसी को ग्रहण कर भक्षण करे। क्योंकि पूजा के अनन्तर जो भगवान् पर चढ़ायी तुलसीदल को भक्षण करता है उसे सौ चान्द्रायण करने से भी अधिक फल होता है।

❀ विसर्जन मन्त्र—गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

दोहा—निज मुखतैं कैसे कहूँ, पूजित ह्वैकें जाउ।
यदि होवै अति विवशता, तो झट जाकें आउ॥

❀ निर्माल्य धारण करने का मन्त्र—
त्वयोभुक्त स्रग्गंधोवासोलङ्कार चर्चिताः।
उच्छिष्ट भोजिनो दासास्तव मायां जयेमहि॥

दोहा—तुम भोगी माला चढ़्यो, चन्दन, पट, लङ्कार।
सीथ प्रसादी पाइकें, होंगे भवतैं पार॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri Funding

चरणामृत

भगवान् के स्नान कराने के अनन्तर जो उनके चरणों का धोया हुआ तुलसी मिश्रित जल हो, उसकी याचना करे। भगवान् के चरणामृत को अत्यन्त श्रद्धा से ग्रहण करे। सभी कर्मों में श्रद्धा ही प्रधान है। चरणामृत लेते समय उसकी महिमा को बोलता जाय। कहता जाय 'यह भगवान् का चरणामृत अकाल मृत्यु को हरने वाला है, सब व्याधियों को विनाश करने वाला है, ऐसे इस विष्णु पादोदक को जो पान करता है, उसका संसार में फिर जन्म नहीं होता।'❀ ऐसी भावना से तीन बार चरणामृत ले। यह ध्यान रखे कि चरणामृत की एक बूँद भी भूमि पर गिरने न पावे। भगवान् के चरणामृत पर यदि लोगों के पैर पड़ेंगे तो बड़ा भारी पाप होगा। इसलिये कपड़े के परत करके उस पर बायें हाथ पर दायाँ हाथ रखकर चरणामृत ले। एक बार लेकर पीले। फिर दुबारा लेकर पीले, फिर तीसरी बार लेकर पीकर उस हाथ को सिर पर पौंछ ले, सिर पर धारण करे।

पञ्चामृत ग्रहण

यदि भगवान् का पञ्चामृत हो तो यह कहे—'इस पञ्चामृत को दुःख दुर्भाग्य के नाश करने के लिये और सभी प्रकार के

❀ तुलसी ग्रहण करने का मन्त्र—

पूजनांतरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।
भक्षये देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्॥

दोहा—तुलसी प्रभु चरननि चढ़ी, प्रेम सहित जो खायँ।
होइ शुद्ध तन फल सहस, शशिव्रत सम ह्वै जायँ॥

❀चरणामृत लेने का मंत्र-अकालं मृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णु पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

दोहा—बिना काल की मृत्युकूँ, टारे अघ नसि जात।
चरनामृत प्रभुको पिये, जनम मरन छुटि जात॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पापों के क्षय करने के निमित्त मैं पान करता हूँ, इसके पान करने से फिर जन्म नहीं होता।'❀ इसी भावना से मीठा-मीठा पञ्चामृत जितना चाहे उतना पान करे।

नैवेद्य ग्रहण

चरणामृत अथवा पञ्चामृत के अनन्तर भगवान् के प्रसाद नैवेद्य को श्रद्धा सहित प्रणाम करे और उसके माहात्म्यको स्मरण करके—"नैवेद्य के अन्न को जो तुलसी और विशेषकर भगवान् के चरणामृत से युक्त हो उसे जो नित्य ही भगवान् के सम्मुख भक्षण करता है, उसे करोड़ों यज्ञों के पुण्यों से भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है।"❀ ऐसी भावना से भगवान् के प्रसाद को प्रेम-पूर्वक पूरा पा जाय।

आविर्होत्र मुनि कह रहे हैं—"राजन्! इस प्रकार भगवान् की पूजा करे। प्रतिमा में तो पूजन इस विधि से किया ही जाता है, किन्तु भगवान् की भावना से अग्नि, सूर्य, जल, अतिथि अथवा अपने हृदय में विराजमान ईश्वर का जो पूजन करते हैं, वे शीघ्र ही संसार बन्धन से विमुक्त हो जाते हैं। यह मैंने अत्यन्त संक्षेप में कर्मयोग का वर्णन किया, अब आप और क्या-क्या सुनना चाहते हैं? श्रीहरि भगवान् अनेक अवतार धारण करके लोक हितार्थ बड़ी मधुर-मधुर लीलायें करते हैं। भगवान् की उन्हीं

❀ पञ्चामृत ग्रहण मन्त्र–दुःख दौर्भाग्य नाशाय सर्वपापक्षयाय च।
विष्णोः पञ्चामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

दोहा—दुःख और दुरभाग्य हू, सर्व पाप कटि जात।
प्रभुको पञ्चामृत पिये, जनम मरन छुटि जात॥

❀ नैवेद्य ग्रहण मन्त्र—
नैवेद्यमन्नं तुलसीविमिश्रितम् विशेषतः पादजलेन विष्णोः।
योऽश्नाति नित्यं पुरुषो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटि पुण्यम्॥

दोहा—हरी हरी तुलसी परी, प्रभु चरनामृत युक्त।
हरि ढिंग प्रभु नैवेद्य जो, पावैं सो जन मुक्त॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding

मुनि मनहारिणी मनोहर मूर्तियों का सब लोग पूजन करते हैं।"

राजा ने कहा—"ब्रह्मन् ! मैंने भगवान् के पूजन की विधि तो आपके श्रीमुख से श्रवण कर ली। अब मैं भगवान् के अवतार चरित्रों के सम्बन्ध में सुनना चाहता हूँ, वे श्रीहरि अपनी इच्छानुसार जैसा चाहते हैं, वैसा रूप रख लेते हैं, उन्होंने, जो-जो इच्छानुसार अब तक अवतार धारण किये हैं अथवा आगे जिन अवतारों को धारण करेंगे और उनमें जो-जो लीलायें की हैं या कर रहे हैं, उन सबको मुझसे कहें।"

हँसकर आविर्होत्र मुनि बोले—"राजन् ! अनन्त की अनन्त लीलाओं का वर्णन ही कौन कर सकता है, फिर भी संक्षेप में जो कुछ वर्णन कर सकेंगे, उसे ये मेरे छोटे भाई द्रुमिल करेंगे।"

सूतजी कहते हैं—"मुनियो ! यह सुनकर महाराज जनक महामुनि द्रुमिल की ओर श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखने लगे। अब वे जैसे भगवतलीलाओं को कहेंगे उनका वर्णन मैं आगे करूँगा।"

छप्पय

श्रीहरि को निरमाल्य गन्ध माला सिर धारें।
पूजित विग्रह यथाथान घरि नाम उचारें॥
यों जल, थल, रवि, अनल, अतिथि प्रतिमाके माहीं।
यजन कृष्णको करै मुक्तिपद दुरलभ नाहीं॥
अरचन, पूजन, कीरतन, अवनारिनि को नित करै।
त्रिभुवनकूँ तारै स्वयं, इक्किस पीढ़िनि सङ्ग तरै॥

नोट—'भागवती कथा' के ५२ वें खण्ड से उद्धृत।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

॥ श्रीहरिः ॥

संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग) से प्रकाशित

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी द्वारा लिखित

पुस्तकों का

संक्षिप्त सूची-पत्र

हिन्दुत्व की रक्षा के निमित्त प्रत्येक हिन्दु के लिये
नित्य अवश्य पालनीय चार नियम

१. *शिखाधारण*—प्रत्येक हिन्दु को सिर पर शिखा अवश्य रखनी चाहिये।

२. *प्रातःस्मरण*—प्रातःकाल उठकर अपनी निष्ठा के अनुसार भगवान् के किन्हीं नामों का स्मरण अवश्य करना चाहिये।

३. *देवदर्शन* —नित्य नियम से आस-पास के किसी देवालय या मन्दिर में दिन में एक वार–किसी भी समय देवता को प्रणाम अवश्य कर लेना चाहिये।

४. *धर्मग्रन्थ पाठ*—किसी भी धार्मिक ग्रन्थ का एक श्लोक अथवा एक छन्द ही नित्य नियम से पाठ अवश्य करें अथवा सुनें ही।

इससे अधिक जितना भी धार्मिक कृत्य करें, उतना ही उत्तम है।

"अधिकस्याधिकंफलम्"

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ श्रीहरिः ॥

पूज्यपाद श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी महाराज कृत "भागवती कथा" "भागवत चरित" तथा अन्यान्य दिव्य ग्रन्थों की

संक्षिप्त-सूची

श्री पूज्यपाद ब्रह्मचारीजी महाराज लिखित धार्मिक अनुपम ग्रन्थों से प्रायः सभी हिन्दी भाषा-भाषी धर्मप्राण पाठक पूर्णरीत्या परिचित हैं। श्री महाराजजी द्वारा लिखित श्री चैतन्य-चरितावली भारत में ही नहीं विश्व के साहित्य में अनुपम ग्रन्थ है। गुजराती, मराठी, तेलगु, तामिल, मलयालम तथा देश की अन्यान्य भाषाओं में इसके अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी लिखी भागवती कथा हिन्दी साहित्य में बेजोड़ ग्रन्थ है। इसे हिन्दी भाषा का समस्त धार्मिक कोश कहना चाहिये। संस्कृत साहित्य में गीता, उपनिषदें और ब्रह्मसूत्र इन तीनों को प्रस्थानत्रयी कहते हैं। महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी इनमें श्रीमद्भागवत को भी और सम्मिलित करके प्रस्थान चतुष्टयी बताते हैं। भागवती कथा में इन चारों की ही विस्तृत सरस-सरल सर्वोपयोगी व्याख्यायें हैं। इन सबका संक्षिप्त परिचय पढ़िये—

१. भागवती कथा—यह एक विस्तृत वृहद् ग्रन्थ है। अब तक इसके ११८ खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक खण्ड दो सौ-ढाई सौ पृष्ठ का होता है, सादे तथा रंगीन चित्र भी रहते हैं। प्रत्येक खण्ड का इस मँहगाई काल में भी केवल ३) तीन रुपया न्यौछावर है। डाक-व्यय पृथक्। भागवती कथा के प्रथम ६० खण्डों में तो भगवत् सम्बन्धी सरस-सरल सुमधुर कथायें हैं। प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में एक श्रीमद्भागवत का छँटा श्लोक होता है, उसी भाव का ब्रजभाषा का छप्पय, फिर उस अध्याय की

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

भूमिका तदनन्तर विषय विवेचन, एक-दो दृष्टान्त की कहानियाँ, उपसंहार और फिर अन्त में छप्पय। यह क्रम आदि से अन्त तक यथावत् है। प्रत्येक अध्याय एक प्रकार से स्वतन्त्र है। केवल छप्पयों को ही पढ़ते जाओ तो पूरा विषय आ जायगा। ६० भागों में तो कथा भाग है, दो भागों में माहात्म्य और ६ भागों में भागवती स्तुतियाँ हैं। इस प्रकार ६८ भागों में भागवत् विवेचन है। सोलह भागों में गीता की सरल-सुगम व्याख्या है। प्रत्येक अध्याय में दो श्लोकों की व्याख्या है, फिर २३ भागों में १९१ उपनिषदों का विवेचन है। आज तक सभी आचार्यों ने दश उपनिषदों के ही सम्बन्ध में लिखा है। १९१ उपनिषदों का विवेचन संसार की किसी भाषा में आज तक नहीं है। हिन्दी भाषा में यह प्रथम प्रयास है। १०७ वें भाग में दर्शनों का संक्षिप्त परिचय और १०८ वें भाग से ११८ वें भाग तक ब्रह्मसूत्रों पर विवेचन है।

इस प्रकार भागवती कथा समस्त आर्य वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म का प्रतिनिधित्व करती है। भाषा इतनी सरल-सुगम सुबोध है कि बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, पठित-अपठित सभी सरलता से समझ सकते हैं। देश के कोने-कोने में सहस्रों स्थानों पर इसकी नित्य नियमित कथायें होती हैं। जिनसे नित्य लाखों स्त्री-पुरुष लाभ उठाते हैं। प्रत्येक ग्राम में, प्रत्येक घर में भागवती कथा रहने से धार्मिक वातावरण बन जाता है।

उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बहुत-सी जिला परिषदों के पुस्तकालयों के लिये सरकार द्वारा स्वीकृत है। ३५) रुपया भेजकर स्थायी ग्राहक बनें। वर्ष के १२ खण्ड आपको घर बैठे रजिस्ट्री से मिल जाया करेंगे।

विद्वानों, नेताओं तथा प्रतिष्ठित पुरुषों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। हमारा बड़ा सूची-पत्र बिना मूल्य मँगाकर बहुत से विद्वानों की सम्मतियाँ पढ़ें। यह ग्रन्थ किसी का अक्षरशः अनुवाद नहीं स्वतन्त्र विवेचन है।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

२. भागवत चरित सप्ताह (पद्यों में)—यह भागवत का सप्ताह है। छप्पय छन्दों में लिखा है। सैकड़ों सादे चित्र ५-६ बहुरंगे चित्र हैं कपड़े की सुन्दर जिल्द है, लगभग हजार पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ११ रु०।

३. भागवत चरित (सटीक दो भागों में)—अनुवादक—पं० रामानुज पाण्डेय, बी० ए० विशारद 'भागवत चरित व्यास' भागवत चरित की सरल हिन्दी में सुन्दर टीका है, प्रत्येक खण्ड में ९०० पृष्ठ हैं, मूल्य ४२ रुपया। एक खण्ड का २१ रुपया।

४. बद्रीनाथ दर्शन—श्री बद्रीनाथ दर्शन यात्रा पर यह बड़ा ही खोजपूर्ण ग्रंथ है। बद्रीनाथ यात्रा की सभी आवश्यक बातों का तथा समस्त उत्तराखण्ड के तीर्थों का इसमें वर्णन है। लगभग सवा चार सौ पृष्ठों की सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य ६) रुपया भारत सरकार द्वारा अहिन्दी प्रान्तों के लिये स्वीकृत है।

५. महात्मा कर्ण—महाभारत के प्राण महात्मा कर्ण का यह अत्यन्त ही रोचक, शिक्षाप्रद तथा आलोचनात्मक जीवन-चरित्र है। ३४० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ५) रुपया।

६. मतवाली मीरा—मीराबाई के दिव्य जीवन की सजीव झाँकी तथा उनके पदों की रोचक भाषा में व्याख्या। २२४ पृष्ठ की सचित्र पुस्तक का मू० ४ रु० है। यह इसका सातवाँ संस्करण है।

७. नाम संकीर्तन महिमा—नाम संकीर्तन महिमा के ऊपर जितनी भी शङ्कायें उठ सकती हैं उनका शास्त्रीय ढङ्ग से युक्तियुक्त विवेचन है। मूल्य १) एक रुपया।

८. श्रीशुक (नाटक)—श्रीशुकदेव मुनि के जीवन की दिव्य झाँकी। पृष्ठ सं० १००, मूल्य १) एक रुपया।

९. भागवती कथा की बानगी—भागवती कथा के खण्डों के कुछ अध्याय बानगी के रूप में इसमें दिये गये हैं। इसे पढ़कर आप भागवती कथा की शैली समझ सकेंगे। पृ० १०० मू० ५० पैसे।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

१०.शोक शान्ति—अपने प्रिय स्वजनों के परलोक प्रयाण पर सान्त्वना देने वाला मार्मिक पत्र। शोक सन्तप्तों की सञ्जीवनी बूटी है। पृष्ठ ६४, मूल्य ५० पैसे। पंचम संस्करण।

११. मेरे महामना मालवीयजी—महामना मालवीय जी के सुखद संस्मरण। १३५ पृष्ठ की छोटी पुस्तक, मूल्य ५० पैसे।

१२. भारतीय संस्कृति और शुद्धि—क्या अहिन्दु पुनः हिन्दु बन सकते हैं, इस प्रश्न का शास्त्रीय ढङ्ग से प्रमाणों सहित विवेचन बड़ी ही मार्मिक भाषा में किया गया है, वर्तमान समय में जब विधर्मी अपनी संख्या बढ़ा रहे हैं यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है। पृष्ठ ७६ मूल्य ५० पैसे।

१३. प्रयाग माहात्म्य—तीर्थराज प्रयाग के माहात्म्य पर ३२ पृष्ठ की छोटी-सी पुस्तिका। मूल्य ५० पैसे।

१४. वृन्दावन माहात्म्य—श्रीवृन्दावन के माहात्म्य पर लघु पुस्तिका। मूल्य २५ पैसे।

१५. राघवेन्दु चरित—(छप्पय छन्दों में)—श्रीरामचन्द्रजी की कथा के ९ अध्याय भागवत चरित से पृथक् छापे हैं। राम-भक्तों को नित्य पाठ के लिये उपयोगी है। पृष्ठ सं १६० मूल्य ६० पैसे, अर्थ सहित ३) तीन रुपया।

१६. प्रभुपूजा पद्धति—भगवान् की पूजा करने की सरल सुगम शास्त्रीय विधि इसमें श्लोकों सहित बताई है। श्लोकों का भाव दोहाओं में भी वर्णित है। मूल्य ५० पैसे।

१७. श्री श्रीचैतन्य-चरितावली—

- प्रथम खण्ड—पृष्ठ २९४, तिरंगे ६ चित्र, मूल्य ३.५० पैसे। सजिल्द ४.५० पैसे।
- दूसरा खण्ड—पृष्ठ ३०३, तिरंगे ४ चित्र, मूल्य ३.५० पैसे। सजिल्द ४.५० पैसे।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

- तीसरा खण्ड—पृष्ठ ३८४ तिरंगे ७ चित्र, मूल्य ३.५० पैसे। सजिल्द ४.५० पैसे।
- चौथा खण्ड—पृष्ठ २३४, तिरंगे ५ चित्र, मूल्य ३.०० सजिल्द ४) रुपया।
- पाँचवाँ खण्ड—पृष्ठ २८८, तिरंगे ४ चित्र, मूल्य ३.५० सजिल्द ४.५० पैसे।

पाँचों खण्डों का मूल्य १७) रु०, सजिल्द २२) रु०। डाक व्यय सभी का पृथक्। पहिले श्रीचैतन्य-चरितावली गीताप्रेस गोरखपुर से छापी थी। अब पाँचों खण्ड हमारे यहाँ छपकर तैयार हैं।

१८. भागवत चरित की बानगी—इससे भागवत चरित के पद्यों की सरसता जान सकेंगे। पृष्ठ १०० मूल्य ७५ पैसे।

१९. गोविन्द दामोदर शरणागत स्तोत्र—(छप्पय छन्दों में) दोनों स्तोत्र हैं। मूल स्तोत्र भी दिये हैं। मूल्य १) रुपया।

२०. श्रीकृष्ण चरित—भागवत चरित से यह पद्यों में श्रीकृष्ण चरित पृथक् छापा गया है। पृष्ठ सं० ३५० मू० ३) रु०।

२१. गोपालन शिक्षा—गौ कैसे पालनी चाहिये। गौओं की कितनी जाति हैं, उन्हें कैसे आहार देना चाहिये। बीमार होने पर कैसे चिकित्सा की जाय। कौन-कौन देशी दवाएँ दी जायँ, इन सब बातों का इसमें विशद् वर्णन है। पृष्ठ २०४ मू० ३ रु०।

२२. मुक्तिनाथ दर्शन—नैपाल में सुप्रसिद्ध मुक्तिनाथ तीर्थ है। यात्रा का बहुत ही हृदयस्पर्शी वर्णन है। नैपाल राज्य तथा नैपाल के समस्त तीर्थों का इसमें विशद वर्णन है, मू० ३) रुपया।

२३. आलवन्दार स्तोत्र मूल तथा छप्पय छन्दों में—अनूदित श्री वैष्णव सम्प्रदाय के महामुनीन्द्र श्रीमत् यामुनाचार्य कृत यह स्तोत्र सर्वमान्य तथा बहुत प्रसिद्ध है। ५ बार में १९५०० प्रतियाँ छपी हैं। मूल्य १) रुपया।

२४. रास पंचाध्यायी—भागवत चरित से रास पंचाध्यायी पृथक् छापी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

२५. गोपी गीत—श्रीमद्भागवत के गोपी गीत का उन्हीं छन्दों में व्रजभाषा अनुवाद है। बिना मूल्य वितरित की जाती है।

२६. श्रीप्रभु पदावली—श्रीब्रह्मचारीजी के स्फुट पदों का सुन्दर संग्रह है। पृष्ठ सं० १२२, मूल्य १ रुपया ५० पैसे।

२७. परम साहसी बालक ध्रुव—१०० पृष्ठ की पुस्तक मूल्य १ रुपया।

२८. सार्थ छप्पय गीता—गीता के श्लोक एक ओर मूल और अर्थ सहित छापे हैं। उनके सामने अर्थ की छप्पय है। सचित्र मूल्य ४ रु०।

२९. हनुमत् शतक—नित्य पाठ करने योग्य यह पुस्तक बहुत ही सुन्दर है। इसमें १०८ छप्पय हैं, सुन्दर हनुमान्जी का एक बहुरङ्गा तथा २१ सादे चित्र हैं। मूल्य १) रुपया।

३०. महावीर हनुमान्—श्री ब्रह्मचारीजी महाराज ने श्री हनुमान्जी का यह विस्तृत जीवन-चरित्र भागवती कथा की भाँति लिखा है, इसमें २१ अध्याय हैं। पृष्ठ सं० २०६ मूल्य ३ रुपया।

३१. भक्त-चरितावली [दो भागों में]—यदि आप चाहते हैं कि हम भी प्रभु के भक्तों की गाथा पढ़कर, भक्ति में आत्मविभोर होकर प्रभु की दिव्य झाँकी की झलक का दर्शन करें तो आज ही भक्त-चरितावली के दोनों भाग मँगाकर पढ़ें। भाग (१) पृष्ठ ४४४ मूल्य ४ रु० ५० पैसे। भाग (२) पृष्ठ ३०३ मूल्य ३ रुपया।

३२. छप्पय भर्तृहरि शतकत्रय—श्री भर्तृहरि के नीति, शृङ्गार और वैराग्य तीनों शतकों का छप्पय छन्दों में भाव अनुवाद। पुस्तक बहुत ओजस्वी कविता में है। मू० २ रु० ५० पैसे।

३३. श्री सत्यनारायण व्रत कथा (माहात्म्य)—छप्पय छन्दों में श्लोक सहित साथ ही पूजा पद्धति भी संक्षेप में दी गई है। मू० १ रुपया।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

३४. छप्पय विष्णु सहस्रनाम तथा दोहा—भाष्य सहित सहस्र नामों के सहस्र दोहे। मूल्य १ रु० ५० पैसे।

३५. भागवत चरित सङ्गीत सुधा—(स्वरकार पं० बंशीधर शर्मा 'भागवत चरित व्यास') भागवत चरित के छप्पय छन्दों को तथा पद स्तुतियों को संगीत के स्वरों में विविध रागों में लिपि-बद्ध किया गया है। मूल्य १ रुपया ५० पैसे।

३६. सूक्त-त्रय (सार्थ छप्पय सहित—(१) पुरुष-सूक्त (२) श्रीसूक्त और (३) लक्ष्मीसूक्त, भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायणजी के मनोहर चित्र के साथ न्यौछावर १) रुपया।

३७. निःश्वास—आज से ४०-४५ वर्ष पूर्व श्री महाराजजी अपनी दैनन्दिनी में कुछ मन को समझाने के निमित्त उपदेश लिखते थे। उन्हें आपके एक परमप्रिय भक्त श्री ने निःश्वास नाम से छपा दिया, इसके कई संस्करण हिन्दी तथा अँग्रेजी में छप चुके हैं। यह छोटी-सी पुस्तक बहुत ही उपादेय है। इसके उपदेश सीधे हृदय पर चोट करते हैं। मूल्य ५० पैसे।

३८. गुरु-भक्ति और एकलव्य—रङ्गमञ्च पर खेलने योग्य धार्मिक नाटक, मूल्य १) रुपया।

३९. भरत-यात्रा तीर्थ माहात्म्य—न्यौछावर ५० पैसे।

४०. एक स्वप्न साकार हुआ—भरत-यात्रा।

४१. द्वितीय भरत-यात्रा एवं कार्य-विवरण—यह भी सरल भाषा में यात्रावृत्त है। अमूल्य।

४२. शुभ विवाह मङ्गलमय हो।

● माधुर्य ग्रन्थ माला के दो अनुपम ग्रन्थ

रचयिता—स्वामी श्री सनातन देव जी

१. माधुर्य-मन्दाकिनी—इसमें विविध राग रागिनियों में २५० पद हैं। न्योछावर ३) रुपये मात्र।

२. माधुर्य-तरङ्गिणी—इसमें भी ऐसे ही लगभग २५० पद हैं। इसका भी मूल्य ३) रुपये है। डाक व्यय पृथक्।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

३—माधुर्य लहरी पृष्ठ २२६–मूल्य ३)
४—माधुर्य मञ्जूसा पृष्ठ–२०१ मू० ३)
५—माधुर्य-कौमुदी पृष्ठ–१६० मू० ३)
६—माधुर्य-मकरन्द पृष्ठ–१८६ मू० ३)
७—माधुर्य-सुरसरि पृष्ठ–१८४ मू० ३)
८—माधुर्य-मयङ्क पृष्ठ–१८१ मू० ३)
९—माधुर्य निकुञ्ज पृष्ठ–१६७ मू० ३)
१०—माधुर्य-निर्झर (बड़े आकार के) पृष्ठ–१६८ मू० ३)
११—माधुर्य-लतिका.....मू० ३)

मिलने का पताः—

मुद्रक—भागवत प्रेस

सङ्कीर्तन भवन, पो० झूसी, प्रयाग

निम्न स्थानों में भी हमारी पुस्तकें मिलेंगीः—

प्रयाग—भागवत प्रेस, ८५२ मुट्ठीगञ्ज, प्रयाग।

वृन्दावन—सङ्कीर्तन भवन, वंशीवट, वृन्दावन (मथुरा)।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding.

...al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand...

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्रीहरिः ॥

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी द्वारा लिखित पुस्तकें

१–भागवती कथा (१२५ खण्डों में)—११८ खण्ड छप चुके हैं। प्रति खण्ड का मू० ३.०० डाकव्यय पृथक्।

२–श्री भागवत चरित—लगभग ६०० पृष्ठ की, सजिल्द मू० ११.००

३–सटीक भागवत चरित (दो खण्डों मे)—एक खण्ड का मू० २१.००

४–बदरीनाथ दर्शन—बदरी यात्रा पर खोजपूर्ण महाग्रन्थ मू० ६.००

५–महात्मा कर्ण—शिक्षाप्रद रोचक जीवन, पृ० सं० ३५० मू० ५.००

६–मतवाली मीरा—भक्ति का सजीव साकार स्वरूप मू० ४.००

७–भक्तचरितावली प्रथम खण्ड मू० ४.५० द्वितीय खण्ड मू० ३.००

८–मुक्तिनाथ दर्शन—मुक्तिनाथ यात्रा का सरस वर्णन

९–गोपालन शिक्षा—गौओं का पालन कैसे करें

१०–श्री चैतन्य चरितावली (पाँच खण्डों में) मू० १७ रु० सजिल

११–नाम संकीर्तन महिमा—पृष्ठ संख्या १००

१२–श्री शुक—श्री शुकदेवजी के जीवन की झाँकी (नाटक)

१३–भागवती कथा की बानगी—पृष्ठ संख्या १००

१४–शोक शान्ति—शोक की शान्ति करने वाला रोचक पत्र

१५–मेरे महामना मालवीयजी—उनके सुखद संस्मरण,

१६–भारतीय संस्कृति और शुद्धि (शास्त्रीय विवेचन)

१७–भागवत चरित की बानगी–पृष्ठ संख्या १०० मू० ०.७५

१८–गोविन्द दामोदर शरणांगत स्तोत्र—(छप्पय छन्दों में) मू० १.००

१९–सत्यनारायण की कथा—छप्पय छन्दों सहित मू० १.००

२०–भागवत चरित संगीत सुधा १.५० २७–प्रभुपूजा पद्धति— मू० ०.५०

२१–कृष्ण चरित— मू० ३.०० २८–श्री हनुमत्-शतक— मू० १.००

२२–प्रयाग माहात्म्य— मू० ०.५० २९–महावीर-हनुमान्— मू० ३.००

२३–वृन्दावन माहात्म्य— मू० ०.२५ ३०–छप्पय विष्णु सहस्रनाम मू० १.५०

२४–सार्थ छप्पय गीता— मू० ४.०० ३१–निःश्वास— मू० ०.५०

२५–राघवेन्दु चरित सटीक मू० ३.०० ३२–गुरु–भक्ति और एकलव्य मू० १.००

२६–राघवेन्दु चरित—मू० ०.६० ३३–भरत-यात्रा तीर्थ माहात्म्य मू० ०.५०

पता—संकीर्तन भवन झूसी (प्रयाग)

हि
४

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand